 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ८ अंक २ अक्तूबर **2014**

संपादक : सिमरजीत सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**



फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ॥१॥
हरि जी लाज रखहु हरि जन की ॥
हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥रहाउ॥
हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचनाकी ॥
लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥२॥
हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की ॥
दिनीअरु सूरु त्रिसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु चंदाकी ॥३॥
तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥
जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि दास दसाकी ॥४॥ *(पन्ना ६६८)*

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी धनासरी राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद की प्रथम पंक्ति में प्रश्न रूप में फरमान कर रहे हैं कि हे भाई! मुझे ऐसा धर्म बताओ जिससे जगत के विकारों के झमेलों से बचा जा सके। मैं इन विकारों के झमेलों से बचना चाहता हूं। अगली पंक्तियों में उत्तर रूप में फरमान है कि इन सब झमेलों के सागर से पार लगने के लिए परमात्मा का नाम-सिमरन नाव है, पुल है। जिस मनुष्य ने पार लगने की चाह की वे नाम-सिमरन द्वारा संसार-समुद्र से पार लग गए। प्रभु के आगे विनती स्वरूप गुरु जी फरमान कर रहे हैं कि हे प्रभु! अपने जन की लाज रख लीजिए। मुझे नाम-जाप की सामर्थ्य प्रदान कीजिए। मैं आपसे आपकी भक्ति की मांग करता हूं।

आगे गुरु जी का फरमान है कि वही हरि के सेवक हरि को प्यारे लगते हैं जिन्होंने उसके नाम का जाप किया है। चित्रगुप्त ने इनके कर्मों का जो लेखा-जोखा लिख रखा था, धर्मराज ने वो सब बराबर कर दिया है। जिन संत-जनों ने साधसंगत में बैठकर अपने मन में हरि-नाम-जाप किया है, उनके हृदय को शांति पहुंचाने वाले प्रभु रूपी चांद प्रकाशित हो गए हैं और उसने हृदय में प्रज्वलित सूर्य रूपी तृष्णाओं की अग्नि को ठंडा कर (बुझा) दिया है, शांत कर दिया है।

अंतिम पंक्तियों में फरमान है कि हे प्रभु! आप सबसे बड़े हो! आप अपहुंच हो! आप अगोचर हो! हर जगह आप ही आप हो! अपने दास पर कृपा कीजिए और अपने दासों के दास का दास बना लीजिए! 



जम्मू-कश्मीर त्रासदी व सिक्ख

इतिहास साक्षी है कि जब भी देश पर अथवा मानवता पर कोई संकट आया तो सिक्ख कौम ने सदैव ही अपनी जान पर खेलकर बचाव कार्यों में योगदान डाला। यह प्रथा गुरु-काल से ही प्रारंभ हो चुकी थी। श्री गुरु नानक देव जी ने भूख से तड़प रहे 'साधुयों' को जहां गुरमति का ज्ञान दिया वहीं साथ ही उनकी भूख को तृप्त करने हेतु भोजन तैयार करवाकर छकाया। यह लंगर संस्था की शुरूआत थी जिसको सिक्ख कौम 'सच्चा सौदा' के नाम से याद करती है। श्री गुरु अंगद देव जी के समय लंगर संस्था पूरी तरह से स्थापित हो चुकी थी जो आज भी निरंतर जारी है। गुरु साहिबान ने मानवता की प्रत्येक ज़रूरत को मद्देनज़र रखते हुए कुएं खुदवाए, सरोवर बनवाए, यहां तक कि जब ज़रूरत पड़ी तो मानवता की भलाई की खातिर अपनी जान तक कुर्बान कर दी। इतिहास ऐसी घटनायों से भरा पड़ा है कि जब भी मानवता पर कोई संकट आया है तो गुरु साहिबान ने सिक्खों को साथ लेकर अपने हाथों से पीड़ितों की सेवा की। गुरु साहिबान द्वारा दी इस शिक्षा को सिक्खों ने पूरी जिम्मेदारी से अपने अंग-संग बांधा है।

आज का मानव आधुनिकता की दौड़ में अपने आपको सबसे ज्यादा ताकतवर समझने लग गया है। वो ताकत के नशे में प्रकृति की अनमोल दात (निधि) के साथ भी खिलवाड़ कर रहा है। मनुष्य द्वारा इज़ाद की मशीनों ने प्रकृति के समतोल को बिगाड़कर रख दिया है। मनुष्य के लिए आज पैसा ही सब कुछ बनकर रह गया है। पैसा इकट्ठा करने की दौड़ में मनुष्य प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है जो समस्त मानवता की तबाही का कारण बन रहा है। परंतु जब प्रकृति प्रकोप में आती है तो वो क्षण में ही मानव द्वारा निर्मित किए साधनों को तहस-नहस करके रख देती है। मनुष्य को सोचने का मौका भी नहीं मिलता कि उसकी इतनी मेहनत से तैयार किए ढांचे कैसे क्षण भर में ही ढह-ढेरी हो गए हैं। मनुष्य के हिस्से पछतावा ही शेष रह जाता है। गत दिनों जम्मू-कश्मीर में आई तबाहकुन भाढ़ इसकी जीती-जागती मिसाल है। जब हम इस प्रकोप की ओर दृष्टि डालते हैं तो मनुष्य का लालच इसमें से सरेआम दीख पड़ता है। मुट्ठी भर पैसों के लालच में मनुष्य ने खुद ही इतनी बड़ी तबाही को दावत दी है।

पहाड़ों में पड़ती बारिश के पानी के निकास के लिए प्राकृतिक नाले बने हुए थे जिनके द्वारा पानी बहता हुआ धरती के रेतले एवं निचले हिस्सों तक जाकर भूमि को उपजाऊ बनाता था। इन निकास नालों की ज़मीनों को महिंगे भाव पर बेचकर उन पर बड़ी-बड़ी कालोनियां तथा शॉपिंग काम्पलेक्स निर्मित कर दिए हैं। जेहलम नदी की ज़मीन नादूर नंबल, नरकारा नंबल तथा हैकारसर पर रिहायशी बस्तियां बना दी गई हैं। परिणामस्वरूप धरती का स्वर्ग कहलाने वाला क्षेत्र कश्मीर आज बाढ़ की त्रासदी से कराह रहा है। जेहलम का पानी एक दर्जन झीलों में उफान करता हुआ बह निकला और झीलों का पानी कश्मीर घाटी के गांवों-शहरों की तरफ बहने लगा। इस पानी ने घाटी के डेढ़ हज़ार गांवों में तबाही मचा दी, जिससे लाखों लोग बेघर हो गए।

सिक्खों को जन्म-घुट्टी में मिली सेवा-भावना जागृत हुई। सिक्ख डटकर मुसीबत से घिरे लोगों की मदद हेतु पहुंच गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर तथा अन्य सिक्ख जत्थेबंदियां जो योगदान डाल रही हैं, उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है। सिक्ख संस्थाओं द्वारा बाढ़-पीड़ितों को लंगर, दवाइयां, कपड़े आदि पहुंचाने की सेवा निरंतर जारी है। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी भारतीय फौज के साथ मिलकर पीड़ितों की सेवा में लगी हुई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुलाज़िम श्रीनगर में बैठकर राहत कार्यों को अंज़ाम दे रहे हैं। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा श्रीनगर के गुरुद्वारा शहीद बुंगा साहिब में निरंतर लंगर चलाया जा रहा है जहां बड़ी संख्या में लोग इस मुसीबत के समय अपनी भूख शांत कर रहे हैं एवं ज़रूरत की वस्तुएं प्राप्त कर रहे हैं। श्रीनगर में लगभग २००० पंजाबी भी बाढ़ में फंसे हुए हैं, जिनको शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हवाई जहाज द्वारा भेजने का प्रबंध कर रही है। बाढ़ की त्रासदी से बचकर आए लोग शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यों की प्रशंसा कर रहे हैं। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुलाज़िमों ने अपना दो दिन का वेतन बाढ़-पीड़ितों की भलाई हेतु दे दिया है तथा जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर ने आदेश दिया है कि जब तक जम्मू-कश्मीर के लोगों को सहायता की ज़रूरत है, यह सेवा बिना रुके, निरंतर जारी रहेगी।



गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै
सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै
बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि
सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी
तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥ (पन्ना ३०५)

श्री गुरु रामदास जी की बाणी में चार लावां
आध्यात्मिक जीवन के चार सोपान

*-डॉ. परमजीत कौर**

गृहस्थ धर्म के कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए निर्लिप्त रहकर प्रभु-मिलाप ही जीवन का परम लक्ष्य माना गया है। श्री गुरु रामदास जी द्वारा सूही राग में रचित दूसरे छंत को 'लावां' के रूप में माना जाता है। गृहस्थ धर्म का उपदेश देने वाली इस पवित्र बाणी द्वारा गुरसिक्ख के विवाह (अनंद कारज) की रस्म को सम्पन्न किया जाता है। श्री गुरु रामदास जी द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलता हुआ जीव सांसारिक कर्त्तव्यों का निर्वाह कर अपने आध्यात्मिक जीवन को संवारता हुआ जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति की ओर उन्मुख होता है। इस पवित्र बाणी में एक ओर सफल गृहस्थ जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण उपदेश दिये गये हैं तो दूसरी ओर प्रभु-पति से मिलाप की इच्छा रखने वाली जीव स्त्री के मन की चार अवस्थाओं, आध्यात्मिक जीवन के चार सोपानों का वर्णन है।

श्री गुरु रामदास जी के अनुसार प्रवृत्ति कर्म पर दृढ़ कर, गुरबाणी में श्रद्धा रखते हुए नाम-सिमरन करना तथा दुष्कर्म रूप पापों का त्याग करना प्रभु के मिलाप का पहला चरण है, प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के विवाह की पहली लाव है :

हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥
बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥
धरमु द्रिड़हु हरि नामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ॥
सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥
सहज अनंदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥
जनु कहै नानकु लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥ *(पन्ना ७७३)*

जब परमात्मा की कृपा होती है तो जीव मोह-माया तथा विषय-विकारों से मन को हटाकर अपने बारे में सोचता है कि उसके जीवन का उद्देश्य क्या है। गुरु की संगत में रहकर उसे यह ज्ञान होता है कि वह इस धरती पर धर्म कमाने के लिए आया है, नाम-सिमरन ही उसके जीवन का लक्ष्य है :

सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इहु ऊतम फलु ॥ *(पन्ना ७१७)*

तो वह न करने योग्य कर्मों का त्याग कर शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त होता है। गुरु साहिब समझा रहे हैं कि गुरु द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलने वाला यह जान लेता है कि क्या ग्रहण करना है अर्थात् कौन-से कर्म करने हैं तथा क्या छोड़ना है अर्थात् कौन-से कर्मों का त्याग करना है :

गुरमुखि परविरति निरविरति पछाणै ॥(पन्ना ९४१)
परविरती नरविरति पछाणै ॥
गुर कै संगि सबदि घरु जाणै ॥
किस ही मंदा आखि न चलै सचि खरा सचिआरा हे ॥ *(पन्ना १०२७)*

शील, संतोष, दया, क्षमा, विनम्रता, परोपकार आदि गुणों को धारण कर निंदा, झूठ, लोभ अहंकार आदि अवगुणों का त्यागकर धर्म के मार्ग पर चलते हुए गुरबाणी में श्रद्धा तथा विश्वास

**६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); मो +९१९८१२३-५८१८६*

रखकर कर्मकांड का त्यागकर परमात्मा के नाम का सिमरन करना प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के विवाह का पहला चरण है, जीवन-यात्रा का प्रथम सोपान है। गुरबाणी सच्चे प्रभु का स्वरूप है :

गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥
(पन्ना ३९)

गुरु की बाणी आत्मिक अडोलता में टिकाकर प्रभु का नाम मन में बसा देती है। विकारों की मैल दूर हो जाती है तथा मन शांत एवं पवित्र हो जाता है :

गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥
सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥१॥ रहाउ ॥
कूड़ु कुसतु त्रिसना अगनि बुझाए ॥
अंतरि सांति सहजि सुखु पाए ॥ (पन्ना ६६५)
इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥ (पन्ना ७९७)
नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा हे ॥ (पन्ना १०५८)

गुरबाणी द्वारा प्रभु के प्रेम के रंग में रंगकर नाम जपने से सारे पाप दूर हो जाते हैं। श्री गुरु रामदास जी दृढ़ करवा रहे हैं कि जिन्होंने श्वास-श्वास नाम-सिमरन किया उनके सारे पाप सड़ गए तथा माया के बंधन टूट गए। वे पवित्र जीवन वाले हो गये :

हम हरि सुआमी प्रीति लगाई जितने सास लीए हम ग्रास ॥
किलबिख दहन भए खिन अंतरि तूटि गए माइआ के फास ॥ (पन्ना १२९५)
हम बहु पाप कीए अपराधी गुरि काटे कटित कटीति ॥
हरि हरि नामु दीओ मुखि अउखधु जन नानक पतित पुनीति ॥ (पन्ना १२९६)

परमात्मा के नाम का सिमरन ही वह रास्ता है जो प्रभु के चरणों में पहुंचाता है :

नाम जपत हरि चरण निवासु ॥ (पन्ना ११५०)

श्री गुरु रामदास जी समझा रहे हैं कि जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम प्यारा लगने लगता है उसका मन भटकता नहीं। उसे आत्मिक स्थिरता का सुख मिल जाता है। परमात्मा के नाम-सिमरन से प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के विवाह का पहली लाव के रूप में सूत्रपात होता है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने वाले पति-पत्नी को पहली लाव के माध्यम से जीवन में कठिनाइयों के आने पर भी सदा गृहस्थ धर्म में प्रवृत्त रहने तथा शील, संतोष, दया, स्नेह आदि धर्म के आधारभूत गुणों को धारण कर परस्पर विश्वास तथा प्रेम को कायम रखकर गुरबाणी के अनुसार जीवन-यापन करते हुए नाम-सिमरन का उपदेश दिया गया है। इससे गृहस्थ धर्म का प्रारंभ सुखदायक हो जाता है।

गुरु की शरण में आकर अर्थात् गुरबाणी के सिद्धातों के अनुसार जीवन-यापन करते हुए मन में प्रभु के निर्मल भय को रखकर, अहंकार रहित होकर परमात्मा को सदैव निकट तथा सर्वव्यापक देखना परमात्मा के साथ जीव-स्त्री के विवाह की दूसरी लाव है :

हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥
निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥
निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥
हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥
अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥
जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥ (पन्ना ७७४)

गुरु साहिब के आदेशों को मन में दृढ़ करने से जीव-स्त्री के मन में परमात्मा का

डर-अदब बना रहता है, जिससे संसार के सारे डर सारे संशय मिट जाते हैं :

से निरभउ जिन्ह भउ पइआ ॥ (पन्ना ११८०)

भै बिनु भरमु न कटीऐ नामि न लगै पिआरु ॥ (पन्ना १२८८)

सारे सांसारिक डर हृदय में टिके हुए परमात्मा के डर-अदब में समा जाते हैं। हृदय में प्रभु के प्रति प्रेम पैदा हो जाता है :

नानक जिन्हा मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥ (पन्ना ४६५)

परमात्मा के डर-अदब में रहने से वह आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है जहां मन सदा परमात्मा के साथ जुड़ा रहता है। यह समझ आ जाती है कि कोई भी कार्य प्रभु से छिपाकर नहीं किया जा सकता, इसलिए अवगुणों के त्याग की प्रवृत्ति बन जाती है। श्री गुरु रामदास जी स्पष्ट कर रहे हैं :

हरि गुण हिरदै टिकहि तिस कै जिसु अंतरि भउ भावनी होई ॥

बिनु भै किनै न प्रेमु पाइआ बिनु भै पारि न उतरिआ कोई ॥ (पन्ना ११११५)

परमात्मा पर भरोसा दृढ़ हो जाता है तथा हउमै दूर हो जाती है :

मनि परतीति बनी प्रभ तेरी ॥

बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ (पन्ना १०७२)

जब तक अंदर अहंकार है तब तक अशांति है, भटकना है, सदाचारक गिरावट है तथा परमात्मा से दूरी है। हउमै अर्थात् अहंकार तथा परमात्मा का नाम दोनों एक साथ हृदय में नहीं टिक सकते। श्री गुरु अमरदास जी का कथन है :

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥

हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥ (पन्ना ५६०)

हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥

मूलहु भुला जनमु गवाए ॥ (पन्ना ६६४)

जब अहंकार की दीवार टूट जाती है तो जीव परमात्मा के गुण-कीर्तन में लीन हो जाता है। परमात्मा से ऐसी सांझ बन जाती है कि परमात्मा सदा निकट प्रतीत होने लगता है :

साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा ॥ (पन्ना ९२४)

मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऐ ॥ (पन्ना १७०)

भगति करे सद वेखै हजूरि ॥

मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ (पन्ना ११७३)

परमात्मा के प्रेम-रंग में रंगी हुई जीव-स्त्री को सर्वव्यापक परमात्मा सारे जीवों के अंदर तथा बाहर सारे जगत् में हर जगह दिखाई देने लगता है। श्री गुरु रामदास जी विस्तार से समझा रहे हैं :

आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ ॥

हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥

हरि आतम रामु पसारिआ मेरे गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥ (पन्ना १७४)

सभ जोति तेरी जगजीवना तू घटि घटि हरि रंग रंगना ॥

सभि धिआवहि तुधु मेरे प्रीतमा तू सति सति पुरख निरंजना ॥ (पन्ना १३१३)

इस अवस्था को प्राप्त जीव-स्त्री के हृदय में हर समय परमात्मा के नाम की धुन बजती रहती है। यह जीव स्त्री की आध्यात्मिक यात्रा का दूसरा पड़ाव है।

गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने वाले दम्पती को दूसरी लाव में समझाया गया है कि अभिमान का त्याग करके एक-दूसरे के प्रति सम्मान तथा हृदय में निर्मल भय को रखकर प्रेमपूर्वक रहने से सब में परमात्मा की ज्योति अनुभव होने

लगती है तथा जीवन सुखमय हो जाता है। तीसरी अवस्था में प्रभु-पति की प्राप्ति की तीव्र इच्छा रखने वाली जीव-स्त्री के मन में वैराग्य पैदा हो जाता है। उसका मन सांसारिक रसों से उपराम हो जाता है तथा मन केवल एक प्रभु के गुण-कीर्तन में ही रच जाता है :

हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥
संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥
निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥
संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥
हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥
जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥ *(पन्ना ७७४)*

जीव-स्त्री प्रभु-पति के गुणों का बख़ान करते-करते, नाम-सिमरन करते-करते इस अवस्था में पहुंच जाती है कि उसके मन में मिलाप की इच्छा पैदा हो जाती है :

सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ ॥ *(पन्ना ४०६)*
मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥
धंनु सु तेरा थानु ॥ *(पन्ना ५०)*

जब मन में वैराग्य पैदा हो जाता है तो दुनिया के रंग-तमाशे, हार-शृंगार, कपड़े-गहने रस-भोग सब के लिए मन में कोई आकर्षण पैदा नहीं होता। परमात्मा के बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता :

दरसन पिआस लोचन तार लागी ॥
बिसरी तिआस बिडानी ॥ *(पन्ना ११९९)*
हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥
आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ *(पन्ना ७०८)*

मन प्रभु-रंग में रंग जाने के कारण जीव को काम, क्रोध, लोभ आदि विकार प्रभावित नहीं करते :

कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥
एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥ *(पन्ना ५४३)*

श्री गुरु अरजन देव जी विस्तार में समझा रहे हैं कि नाम-रस का आनंद यह है कि उस अवस्था में मन की सारी दौड़ समाप्त हो जाती है। माया का लालच नहीं रहता, संतुष्टि की भावना पैदा हो जाती है, मन सदा उत्साहित तथा आनंदित रहता है। तृष्णा मिट जाती है। जीवन में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। गुरबाणी सुनते ही दुख-क्लेश, परेशानी नहीं रहते। मन आत्मिक शांति का अनुभव करता है :

हरि रसु चाखत ध्रापिआ मनि रसु लै हसना ॥
बुधि प्रगास प्रगट भई उलटि कमलु बिगसना ॥
सीतल सांति संतोखु होइ सभ बूझी त्रिसना ॥
दह दिस धावत मिटि गए निरमल थानि बसना ॥ *(पन्ना ८११)*

श्री गुरु रामदास जी के अनुसार जब तक मन नाम-रस का आस्वादन नहीं करता तब तक अन्य रस अच्छे लगते हैं। जब परमात्मा के नाम-रस का आनंद अनुभव होने लगता है तो मन अन्य सारे रस भूल जाता है :

रसना साद चखै भाइ दूजै अति फीके लोभ बिकारे ॥
जो गुरमुखि साद चखहि राम नामा सभ अन रस साद बिसारे ॥ *(पन्ना ९८०)*

परमात्मा के मिलाप की तीव्र अभिलाषा रखने वाली जीव-स्त्री परमात्मा के बिना कोई अन्य आश्रय नहीं ढूंढती, परमात्मा के साथ ही जुड़ी रहती है :

दरसन की पिआस जिसु नर होइ ॥
एकतु राचै परहरि दोइ ॥ *(पन्ना ११८८)*

शरीर, प्राण सब प्रभु की अधीनता में रहने के लिए प्रार्थना करते हैं। इस अवस्था में समझ आ जाती है कि प्रीतम प्रभु गुरु-शबद द्वारा ही जीव को संसार समुद्र से पार करता है। मन सदा प्रार्थना करता है कि हे गुरु! दया करो, मुझ भिखारी को यह दान दो कि प्रीतम-प्रभु से मिलाप हो जाये :

जब देखां पिरु पिआरा हरि गुण रसि रवा राम ॥
मेरै अंतरि होइ विगासु प्रिउ प्रिउ सचु नित चवा राम ॥
प्रिउ चवा पिआरे सबदि निसतारे बिनु देखे त्रिपति न आवए ॥
सबदि सीगारु होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवए ॥
दइआ दानु मंगत जन दीजै मै प्रीतमु देहु मिलाए ॥
अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर विटहु घुमाए ॥ *(पन्ना ११११३)*

निरंतर नाम-सिमरन करते रहने से हृदय में प्रभु-प्रेम की अविरल धारा प्रवाहित होने लगती है। सौभाग्यशाली जीव ही इस अवस्था को प्राप्त करते हैं। हृदय में इस तरह के वैराग्य का पैदा होना प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के विवाह की तीसरी लाव है।

'अनंद कारज' द्वारा प्रेम के सूत्र में बंधने वाले जीवों को तीसरी लाव में दृढ़ करवाया गया है कि जैसे-जैसे पति-पत्नी का परस्पर प्रेम बढ़ता है, सम्बंध की डोर मज़बूत होती जाती है। पत्नी की अपने पिता के घर की पकड़ ढीली पड़ती जाती है। इस अवस्था में पति-पत्नी को एक-दूसरे की भावनाओं को समझकर दूसरे के लिए अपने सुख का त्याग करने का आदेश दिया गया है। परमात्मा से जुड़े हुए लोगों की संगत करने से यह रास्ता आसान हो जाता है।

प्रभु के रंग में रंगकर आत्मिक स्थिरता में रहते हुए सहज अवस्था की प्राप्ति प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के मिलाप की चौथी लाव कही गयी है :

हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥
हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥
मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥
हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥
जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥ *(पन्ना ७७४)*

जब जीव-स्त्री प्रभु-पति के रंग में रंग जाती है, प्रभु-मिलाप का मनोवांछित फल प्राप्त कर लेती है तो उसके हृदय में सदा आनंद बना रहता है, वह सदा सहज अवस्था में विचरण करती है। इस अवस्था में वह सारी चतुराई, बुद्धिमता त्यागकर पूर्ण समर्पण की भावना में रहती है। मन सुखों में अत्यधिक उत्साहित तथा प्रसन्न होने और दुखों से डरने तथा आहत होने का स्वभाव त्याग देता है। परमात्मा की कृपा से लाभ-हानि, सुख-दुख परमात्मा की रज़ा में एक-से प्रतीत होने लगते हैं :

भावनु तिआगिओ री तिआगिओ ॥
तिआगिओ मै गुर मिलि तिआगिओ ॥
सरब सुख आनंद मंगल रस मानि गोबिंदै आगिओ ॥
(पन्ना २१४)
मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिओ ॥
संपत हरखु न आपत दूखा रंगु ठाकुरै लागिओ ॥
(पन्ना २१५)

इस अवस्था में घर तथा जंगल एक जैसे

सुखदायक प्रतीत होते हैं। परमात्मा के दर्शन से मन सदा तृप्त तथा संतुष्ट रहता है। श्री गुरु अरजन देव जी मन की इस अवस्था का चित्रण कर रहे हैं :

हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥
सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥
दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥
पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते ॥ (पन्ना १८१)

इस दशा में प्रभु प्यारा लगने लगता है। जिस जीव को परमात्मा प्यारा लगने लगता है, प्रभु को भी वह जीव प्यारा लगता है। परमात्मा उस पर कृपा करके उसे अपने नाम-सिमरन में लगाता है तथा मनोवांछित फल प्रदान करता है। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

जा तिसु भावा तद ही गावा ॥
ता गावे का फलु पावा ॥ (पन्ना ५९९)
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ (पन्ना ६)
दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥
भाइ भगति साचे गुण गावा ॥
तुधु भाणे तू भावहि करते आपे रसन रसाइदा ॥ (पन्ना १०३४)

इस अवस्था को प्राप्त जीव-स्त्री का मन सदा आनंदित तथा उल्लास में रहता है :

प्रीतम भानी तां रंगि गुलाल ॥
कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥ (पन्ना ३८४)
मंदरि मेरै सबदि उजारा ॥
अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥
मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥
थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥ (पन्ना ३८४)

जैसे आम पानी व समुद्र का पानी मिलकर एक रूप हो जाते हैं वैसे ही नाम-सिमरन से वासना रहित अडोल सहज अवस्था में विचरण करता हुआ मन अफुर प्रभु में मिल जाता है। उसको हर जगह परमात्मा दिखायी देता है। वह प्रभु का रूप हो जाता है।

जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥ (पन्ना ६६७)

गृहस्थ जीवन की सफलता के लिए गुरु जी ने चौथी लाव में संपूर्ण समर्पण तथा सहज अवस्था के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। घर तथा समाज में विचरण करते समय स्तुति-निंदा, मान-अपमान, सुख-दुख, लाभ-हानि की अवस्था में धैर्यपूर्वक संयम धारण करने से जीवन सुखदायक हो जाता है।

वास्तव में श्री गुरु रामदास जी द्वारा इस पवित्र बाणी में सांसारिकता तथा आध्यात्मिकता का सुंदर समन्वय किया गया है। गृहस्थ धर्म के कर्त्तव्यों का पालन करता हुआ जीव अपने दैनिक कर्मों को परखकर गुरबाणी में निर्दिष्ट सिद्धांतों के अनुसार जीवन को ढालकर उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर सकता है। गुरबाणी से प्रेम हो जाये तो सत्य, संतोष, दया, धर्म, धैर्य आदि गुण अंदर बस जाते हैं। माया का मोह, मन की चंचलता, हउमै समाप्त हो जाती है। प्रभु का नाम सिमर-सिमरकर प्रभु से प्रेम हो जाता है। मन सांसारिक विषयों से उपराम हो जाता है। परिवार का मोह-प्यार त्रिगुणात्मक माया में नहीं फंसाता। जीव निर्लिप्त भाव से जीवन-यापन करता हुआ धीरे-धीरे सहज अवस्था को प्राप्त कर लेता है। 

लावां : सांसारिकता से आध्यात्मिकता का मार्ग

*-स. सुखदेव सिंघ शांत**

मानवीय जीवन के संस्कारों में विवाह संस्कार की विशेष महत्ता है। जब किसी लड़के या लड़की का विवाह होता है तो यह समझा जाता है कि नये जीवन का आरंभ हुआ है। विवाह के उद्देश्य संबंधी लोगों के अलग-अलग विचार हैं। कुछ लोग इसको स्त्री एवं पुरुष के इकट्ठा रहने का एक साधन या समझौता समझते हैं, कुछ लोग इसको संतान-उत्पति के लिए मानते हैं, कुछ लोग इसको सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष से एक ज़रूरत मानते हैं। रिश्तों में से पति-पत्नी का रिश्ता सबसे निकटता वाला रिश्ता माना जाता है। विश्व के सब धर्मों में इस रिश्ते को धार्मिक रंगत देकर पावन रिश्ता प्रवान किया गया है। किसी भी धर्म के लोगों द्वारा जब किसी लड़के-लड़की को विवाह के बंधन में बांधा जाता है तो अपने-अपने इष्ट की पूजा की जाती है और धार्मिक रस्में अदा की जाती हैं। पादरी, मौलवी, पंडित तथा ग्रंथी के द्वारा ही इस रिश्ते को गांठे दी जाती हैं।

सिक्ख धर्म में विवाह संस्कार 'अनंद कारज' के रूप में होता है। यह कार्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में किया जाता है। उस समय श्री गुरु रामदास जी द्वारा सूही राग में रचित लावां से संबंधित बाणी का पाठ किया जाता है। 'अनंद कारज' के मुख्य रूप में तीन मंतव्य लगते हैं :-

पहला यह कि ब्याही जा रही जोड़ी को एक इष्ट के विश्वास पर केंद्रित किया जाना है, क्योंकि अगर पति-पत्नी का इष्ट एक होगा तथा एक ही विश्वास होगा तो वह रिश्ता पूरी तरह से परिपक्व रहेगा। उनके जीवन का रास्ता, साधन एवं मंज़िल एक होंगे। वे अलग-अलग दिशाओं में नहीं भटकेंगे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की चार बार परिक्रमा करके लड़का तथा लड़की यह प्रण लेते हैं कि वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लड़ लगे रहेंगे तथा जीवन भर इसकी शिक्षा से अगुआई लेते रहेंगे।

दूसरा मंतव्य, इस रिश्ते को धार्मिक रंगत देकर पवित्र बनाना है। गुरु एवं संगत की प्रवानगी की मुहर इस रिश्ते को लग जाती है।

तीसरा मंतव्य, 'लावां' से सम्बंधित बाणी के पाठ द्वारा लड़के-लड़की को विवाह तथा गृहस्थ का उद्देश्य दर्शाना है। यह एक उच्चतम शिक्षा है। जिसमें जीवन को गुणों से भरपूर करने की प्रेरणा दी गयी है।

यह एक पवित्र उपदेश है, जिसके द्वारा यह बताया गया है कि गृहस्थ के मार्ग द्वारा कैसे परमात्मा की प्राप्ति के रास्ते की तरफ जाया जा सकता है। इस बाणी से यह पता चलता है कि गृहस्थ परमात्मा की भक्ति में रुकावट नहीं बल्कि सहायक साधन है।

विचारों की सांझ, विश्वास की सांझ तथा मंज़िल की सांझ नि:संदेह घर में शांत वातावरण पैदा करती है। घर के बीच शांति होते हुए परमात्मा की भक्ति करने के लिए समय, प्रेरणा तथा शक्ति तीनों वस्तुएं मिल जाती हैं। गुरु-इतिहास में बीबी भानी जी, माता गुजरी जी तथा माता सुंदरी जी आदर्श पत्नियों के रूप में

***३६-बी, रतन नगर, पटियाला-१४७००१*

हमारे समक्ष हैं। गुरु साहिबान एवं भक्त साहिबान ने अपने आदर्श गृहस्थ जीवन द्वारा यह व्यवहारिक शिक्षा हमें दी है कि सचमुच ही ईश्वर की भक्ति के लिए घर त्यागने की ज़रूरत नहीं। कर्म-योग का मार्ग उन्होंने खुद सच्चे कर्म-योगी बनकर मानवता को समझाया है।

संसार में दो मार्ग मुख्य हैं-- प्रवृत्ति व निवृत्ति। इन दोनों में से किसी एक की अति (ज्यादा होने का भाव) बुरी है। अगर मनुष्य मोह-माया के जाल में इतना फंस गया या उलझ गया कि उसको अपनी असलियत का एहसास भी न रहा तो समझो उसका जीवन व्यर्थ हो गया। दूसरी तरफ अगर मनुष्य दुनिया के संबंध में इतना उपराम हो गया कि वह बिल्कुल अकेला कहीं जा छिपा तो भी वह अपने जीवन-उद्देश्य को नहीं पा सकता। उपरोक्त दशा को देखते हुए श्री गुरु रामदास जी ने फरमान किया है :

हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥ *(पन्ना ७७३)*

इस तरह गुरु साहिब ने गृहस्थ मार्ग द्वारा प्रवृत्ति कर्म में दृढ़ होने की शिक्षा दी है। यह मार्ग गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥ *(पन्ना ७७४)*

गृहस्थ गुरु की कृपा से और उसके हुक्म से मिल गया। गृहस्थ मिलने से क्या हुआ? इसके बारे में गुरु साहिब बताते हैं :

हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ *(पन्ना ७७४)*

गृहस्थ मार्ग की प्राप्ति से पति-पत्नी दोनों के दिलों में एक चाव पैदा होता है, एक नयी सांझ बनती है। इस सांझ के बनने की क्रिया के साथ-साथ माहौल में वियोग की उपरामता भी होती है। लड़की की आंखों में वैराग्य के आंसू होते हैं। उसके आंसू हर एक की आंखों को यहां तक कि पति की आंखों को भी नम कर देते हैं। प्रो पूरन सिंघ ने इन आंसुओं को पवित्र मानते हुए इनको 'नयनों की गंगा' का दर्जा दिया है। इस तरह इस अवसर पर वैराग्य भरी खुशी होती है।

वैराग्य भरी खुशी होने के बाद 'सहज' पैदा होता है, जीवन में स्थिरता पैदा होती है, मन की एकाग्रता पैदा होती है। गुरु साहिब का फरमान है :

हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥ *(पन्ना ७७४)*

परमार्थ के मार्ग को इस प्रकार बयान किया जाता है-- डर, प्रेम, वैराग्य, तथा सहज। पहले मनुष्य में ईश्वर का 'डर' जागता है। उसको मनुष्य हाकिम या मालिक के रूप में समझता है। ईश्वर से प्रेम पैदा हो जाने पर यह डर 'निर्मल भउ' में तबदील हो जाता है। डर या झिझक का अंश अवश्य रहता है किंतु यह गुलाम के मन वाले डर जैसा डर नहीं होता। यह डर *'बधा चटी जे भरे'* वाला डर नहीं होता। मनुष्य परमात्मा के हुक्म में रहता है, किंतु रहता खुशी से है, आत्म-समर्पण से है तथा मर्ज़ी से रहता है। श्री गुरु अंगद देव जी सूही राग में फरमान करते हैं :

बधा चटी जे भरे ना गुणु ना उपकारु ॥
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥
(पन्ना ७८७)

प्रेम की अवस्था में एकसुरता होती है। यह प्रेम सहज-स्वभाव होता है। यह प्रेम खुद-ब-खुद होता है। यह प्रेम दो तरफा होता है। यह प्रेम *'एक जोति दुइ मूरती'* वाला प्रेम होता है। यह प्रेम सिर्फ इकट्ठा बैठने वाला प्रेम नहीं होता। यह प्रेम मात्र शारीरिक नहीं होता। 'धन पिरु' की परिभाषा श्री गुरु अमरदास जी ने इस तरह की है :

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥

एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐे सोइ ॥
(पन्ना ७८८)

श्री गुरु अंगद देव जी सही मिलाप के अर्थ इस प्रकार बताते हैं :

मिलिऐ मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥
अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐे सोइ ॥
(पन्ना ७९१)

अंतर-आत्मा मिलने की बात है। मिले हुए कहने से ही नहीं मिला जाता। असली अंतरीव मिलने को ही मिलन कहा जा सकता है :

धन पिर एकै संगि बसेरा ॥
सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥ (पन्ना ४८३)

इस प्रेम में किसी दूसरे की उम्मीद नहीं होती। इस प्रेम में अभिमान या हउमै की कोई जगह नहीं होती। यह सुहाग पूर्ण रूप से समर्पण हो जाने का नाम है। भक्त रविदास जी उपदेश देते हैं :

सह की सार सुहागनि जानै ॥
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥
तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥
अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥ (पन्ना ७९३)

बाबा फ़रीद जी भी कुछ इसी तरह फरमान करते हैं :

ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥
जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥
(पन्ना १३८४)

एक ईश्वर, एक पति तथा एक पत्नी का संदेश धर्म व धर्म भरे गृहस्थ का संदेश है। जैसे ईश्वर एवं भक्त का आपस में संबंध है इसी प्रकार पति एवं पत्नी का आपस में संबंध है। गुरबाणी में जहां आध्यात्मिक संबंध की बात है वहीं सांसारिक संबंधों को भी आंखों से ओझल नहीं किया गया, बल्कि पति-पत्नी के संबंध को अलंकारक रूप में परमात्मा एवं मनुष्य के सम्बंध में बयान करने के लिए प्रयोग किया गया है। ऐसे लगता है कि गृहस्थ के मार्ग द्वारा परमार्थ का मार्ग दर्शाया गया है। हम धरती की बातों को शीघ्र समझ सकते हैं, इसलिए महापुरुषों ने अर्श की बातें फर्श की शब्दावली में की हैं। फिर अर्श व फर्श का संबंध भी अटूट है। गुरबाणी में जगह-जगह 'धन पिरु' की एकाग्रता पर ज़ोर दिया गया है। पति-पत्नी के रिश्ते में किसी अन्य की आमद या झांक को अपवित्र माना गया है। भाई देसा सिंघ के 'रहितनामे' में 'पर नारी' के अवगुण को जूआ, झूठ, चोरी एवं नशे के अवगुण के बराबर माना गया है। इसी रहितनामे में 'रहितवंत सिंघ' के बारे में लिखा गया है :

पर बेटी को बेटी जानै। पर इसत्री को मात बखानै।
अपनि इसत्री सो रति होई। रहतवंत सिंघ है सोई।

इस प्रेम में अन्य कोई तीसरा नहीं आ सकता। जब इस प्रेम से डर, हउमै व भेद मिट जाते हैं तो फिर वैराग्य पैदा होता है। यह वैराग्य मनुष्य को गृहस्थ से आध्यात्मिक संबंधों की तरफ ले जाता है व 'सहज अवस्था' की मंज़िल प्राप्त होती है। इस तरह गृहस्थ मार्ग प्रभु-भक्ति का एक साधन बनता है, एक रास्ता बनता है तथा यह रास्ता मनुष्य को अपनी वास्तविकता का ज्ञान देकर आध्यात्मिक रंगत में रंग देता है। गृहस्थ के मार्ग द्वारा मनुष्य सेवा, परोपकार, हमदर्दी, दया जैसे गुणों को आसानी से व्यवहारिक रूप दे सकता है, अपनी संतान को अच्छे गुणों व भक्ति-भावना से भरपूर करके अपने समाज को और अच्छा बना सकता है। आदर्शक गृहस्थ द्वारा मनुष्य अपना लोक-परलोक संवार सकता है। फिर श्री गुरु रामदास जी के इन शबदों का मनोरथ पूरा हो सकता है :

सतु संतोखु करि भाउ कुड़मु कुड़माई आइआ बलि राम जीउ ॥
संत जना करि मेलु गुरबाणी गावाईआ बलि राम जीउ ॥ (पन्ना ८८३)

श्री गुरु रामदास जी की बाणी में आदर्श सेवक का संकल्प

*-डॉ. शमशेर सिंघ**

सिक्ख धर्म में आदर्श सिक्ख एक निष्काम सेवक है। ऐसा सेवक बनना ही उसके जीवन का निशाना है। गुरमति के महल में सेवा एवं सेवक दो बड़े स्तंभ हैं। इन दोनों मूलक सिद्धांतों के बिना गुरमति की व्याख्या अधूरी है। सिक्ख इतिहास में सेवक का एक विशेष स्थान वर्णन किया गया है। सेवक को उच्च पदवी प्राप्त है। गुरु साहिब ने सिक्खी मिशन को आगे चलाने के लिए जब अपने उत्तराधिकारी का चयन किया उस वक्त भी सेवक की निष्काम सेवा को ही मुख्य रखा। सेवक का यह इम्तिहान सबसे बड़ा इम्तिहान होता है।

श्री गुरु नानक देव जी से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक मानव-शख़्सियत का बहुपक्षीय निर्माण अति नई रचना थी, एक परिवर्तन था। मनुष्य को खुद का ज्ञान करवाने तथा इस जीवन की सफलता के लिए एक प्रयत्न था। सेवक की शख़्सियत को हर पक्ष से पूर्णता देना गुरु साहिबान के मिशन का उद्देश्य था। मानव-शख़्सियत के नवनिर्माण के सिद्धांत को गुरु साहिबान ने केवल बयान ही नहीं किया बल्कि जीवन में ढाला भी, जो सबके लिए एक आदर्श मिसाल है, प्रकाश-स्तंभ है। सभी गुरु साहिबान की शख़्सियत में सेवक वाला रूप भी विद्यमान रहा है।

श्री गुरु रामदास जी की बाणी में आदर्श सेवक की शख़्सियत की झलक नज़र पड़ती है। गुरु जी ने सेवक के समानार्थी शब्दों का इस्तेमाल भी किया है, जैसे :

'लाले गोले' = जन नानक गुर के लाले गोले लगि संगति करूआ मीठा ॥ (पन्ना १७१)

'गोली' = अपुने हरि प्रभ की हउ गोली ॥ (पन्ना १६८)

'जन' = जन की पैज सवारे ॥ (पन्ना ९८२)

इसी प्रकार शब्द 'गुलाम', 'दास' तथा 'चेरी' का इस्तेमाल भी मिलता है। कहीं-कहीं शब्द 'वेगारि' तथा 'वेगारीआ' का ज़िक्र भी मिलता है।

सेवक के लिए सबसे पहले आवश्यक है कि पूरी आस्था तथा श्रद्धा से सेवा करने के लिए खुद को समर्पित करने की भावना मन में हो। सेवक अपना तन, मन तथा धन सब गुरु को समर्पित कर सेवा करे। इस प्रकार पूर्ण रूप में स्व-अर्पण करने से ही सेवक की सेवा पूर्ण होती है। गुरु के हुक्म में चलने से अहं का अभाव होता है। कामना रहित सेवा आदर्श सेवक की पूर्ति में सहायक हो सकती है। सेवक ऐसा करने से अपने पास से कुछ देता नहीं (उसके पास प्रभु को देने के लिए स्वयं का कुछ है भी नहीं सिवाय मन के) बल्कि प्रभु द्वारा दी हुई अमानत ही वापिस करता है। भक्त कबीर जी ने इस सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए फरमान किया है :

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥
(पन्ना १३७५)

**१३३, लांग स्ट्रीट, शेखूपुरा, डाक: पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो. +९१९८८८४३८१५७*

श्रद्धा एवं आस्था से सेवा करने से ही प्रभु अपने सेवकों को प्यार करता है, नाम का सहारा देता है तथा अंग-संग होकर डगमगाने से बचाता है। निष्काम सेवक को सब जगह एक ही प्रभु नज़र आता है। श्री गुरु रामदास जी का फरमान है :

प्रभ के सेवक बहुतु अति नीके मनि सरधा करि हरि धारे ॥
मेरे प्रभि सरधा भगति मनि भावै जन की पैज सवारे ॥१॥
हरि हरि सेवकु सेवा लागै सभु देखै ब्रहम पसारे ॥
एकु पुरखु इकु नदरी आवै सभ एका नदरि निहारे ॥ (पन्ना ९८२)

सेवक को अपने दयालु एवं मेहरबान प्रभु पर पूर्ण भरोसा होता है कि वो अपने सेवकों पर सदा कृपा करता आया है और करता रहेगा। यह केवल इस युग की ही बात नहीं बल्कि प्रत्येक युग में अपने भक्तों पर प्रभु ने कृपा की है तथा उनकी रक्षा की है। हर क्षेत्र में सफलता के लिए उन्हें दिशा प्रदान की है और उनके दुष्टों का संहार किया है; अहंकारियों एवं निंदकों को दुत्कार कर अपने भक्तों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा की बख़्शिश की है।

श्री गुरु रामदास जी मारू राग में इस ख़्याल को बड़े स्पष्ट एवं प्रभावशाली रूप में वर्णन करते हैं :

जन कउ आपि अनुग्रहु कीआ हरि अंगीकारु करे ॥
सेवक पैज रखै मेरा गोविदु सरणि परे उधरे ॥
जन नानक हरि किरपा धारी उर धरिओ नामु हरे ॥ (पन्ना ९९५)

सेवक की गुरु पर श्रद्धा एवं अटूट विश्वास ही उसे इस संसार-समुद्र से पार उतारने के लिए सहायक होता है। प्रभु, गुरु तथा गुरु के शबद (बाणी) में समानता है। गुरु प्रभु का भेजा हुआ प्रतिनिधि है। सेवक एवं गुरु का रिश्ता रहस्यमयी है, जिसे बयान नहीं किया जा सकता केवल अनुभव किया जा सकता है। यह कोई सांसारिक रिश्ता नहीं। गुरु की बाणी, बोल अलाही पैगाम हैं; दिल, दिमाग तथा आत्मा तीनों को अपील करने वाले हैं। गुरु की बाणी सेवक का आध्यात्मिक स्व है; सेवक के लिए कल्याणकारी है, लोक-परलोक में सहायक है; आत्मिक जीवन देने वाला नाम-जल है। जो सेवक इसको हृदय में संभालकर रखता है, यकीनन उसको गुरु संसार-सागर से पार लगा देता है अर्थात् जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त कर देता है। श्री गुरु रामदास जी ने इस सम्बंध में फरमान किया है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ (पन्ना ९८२)

श्री गुरु रामदास जी ने आदर्श सेवक की हैसियत से दृढ़ करवाया है कि सेवक की सेवा वही सफल है जो गुरमुख बनकर की जाती है। सेवा कोई बंधन नहीं होती, मज़बूरी नहीं होती, बल्कि कामना रहित, खुशी-खुशी किया परोपकारी कार्य है। सेवा वही सफल है जिससे गुरु का मन संतुष्ट है। ऐसी सेवा पाप नाशक है। सेवा प्रभु तथा जीव के दरमियान बनी अहं की दूरी को दूर कर सकती है। ऐसी सेवा ही प्रभु दर पर प्रवान है। ऐसी सेवा वाले सेवक का संसार में आना सफल हो जाता है। मनमुख होकर सेवा नहीं हो सकती। निष्काम सेवा से ही सेवक की तृष्णा की भूख उतर सकती है, सांसारिक स्वादों की तरफ मन नहीं भटकता। सेवा की खुशी ही मानसिक तृप्ति प्रदान करती है और आत्मिक स्तर पर नाम-सिमरन की उमंग पैदा होती है। गुरु जी ने इसी विश्वास को निम्न अनुसार

बयान किया है :

ऐसा हरि सेवीऐ नित धिआईऐ जो खिन महि किलविख सभि करे बिनासा ॥
जे हरि तिआगि अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥
मेरे मन हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविऐ सभ भुख लहासा ॥१॥
मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा ॥
जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥ (पन्ना ८६०)

मनोवैज्ञानिक पक्ष से सेवक के मन में सेवा की अमिट छाप बनाने के लिए गुरु जी ने अलग-अलग शबदों द्वारा इसे प्रभावशाली बनाने के लिए भरपूर व्याख्या की है। सेवक जब आत्मिक अवस्था पर पहुंच जाता है तो अपने प्राण तक भी (गुरु के प्रति) सेवा के लिए कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाता है। बहुत आनंद है, अपना आप कुर्बान करने में जहां **'मै-मेरी'** खत्म हो जाती है, केवल **'तू ही तू'** रह जाता है। यह सिद्धांत श्री गुरु ग्रंथ साहिब के योगदानियों की एक मौलिक देन है।

श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं कि हे प्रभु! मेरे प्राण भी आपके वश में ही हैं। मेरी जान और मेरा शरीर सब आपका दिया हुआ है। सारा संसार प्रभु के वश में है। सच्चे सेवक को यह ज्ञान है कि यह शरीर, शरीर की कर्म-इंद्रियां, ज्ञान-इंद्रियां सब प्रभु की देन हैं और इनका उपयुक्त इस्तेमाल ही जीवन-उद्देश्य की पूर्ति की तरफ उठाए गए कदम हैं। यदि इनका गलत इस्तेमाल करते हैं तो जीव का आना निष्फल है। आखिर में पल्ले पश्चाताप ही रह जाता है :

हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥ . . .
जगंनाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ (पन्ना १७०)

गुरु साहिबान ने भारतीय धार्मिक एवं परंपरागत अपनाई गई सेवक की परिभाषा को बदलकर एक नई दिशा आदर्शक रूप एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति के रूप में प्रदान की। गुरमति विचारधारा के अनुसार सेवक न तो तनख्वाहदार नौकर है और न ही पदार्थक लालच को मुख्य रखकर सेवा करता है। गुरु जी ने शब्दावली चाहे परंपरागत गुलाम, गोला, लाला-गोला, चाकर, चेरी, दास, जन आदि इस्तेमाल की है मगर यहां पर इन शब्दों का भाव नम्रता का सूचक है। सांसारिक दृष्टिकोण से नीचा समझा जाने वाला काम सेवक नम्रता एवं श्रद्धा से करने में गौरव समझता है। ऐसी सेवा का मूल्य गुरमति के दृष्टिकोण से लोक-परलोक दोनों में पड़ता है। इसका पड़ा मूल्य सेवक तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि अन्य लोगों तक भी लाभदायक सिद्ध होता है। गुरु जी का फरमान है कि जो सेवक मेरे प्रभु का संदेश देता है मैं उसके लिए अपना तन-मन बेचने के लिए तैयार हूं :

जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा ॥ . . .
नित नित सेव करी हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए ॥ (पन्ना ५६१)

गुरमति में सेवक की सेवा पूर्ण होने पर सेवक एवं मालिक (प्रभु) के मध्य की दूरी खत्म हो जाती है। इस निकटता की अवस्था ने धार्मिक इतिहास में एक नया मोड़ दिया, जिज्ञासु को एक नई दिश दी :

हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥
भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ (पन्ना १०७६)

प्रभु के साथ समानता होने के बाद सेवक

का व्यापार तथा गुण सांसारिक आम मनुष्यों से अलग, अमर तथा आत्मिक निष्ठा वाले हो जाते हैं। गुरु शबद के माध्यम से अपने सेवक को अंदर-बाहर से संवार देता है। उसका व्यक्तित्व पूर्ण मनुष्य वाला हो जाता है। यहां सेवक एवं मालिक (गुरु) का रिश्ता प्यार वाला है न कि गुलाम एवं मालिक वाला। गुरु जी इस सिद्धांत की पुष्टि जगह-जगह करते हैं :

कोई पुतु सिखु सेवा करे सतिगुरू की तिसु कारज सभि सवारे ॥ (पन्ना ३०७)

सचु सेवहि सचु वर्णजि लैहि गुण कथह निरारे ॥
सेवक भाइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥ (पन्ना ३०८)

गुरमति ने सेवक एवं गुरु के सम्बंध को आगे ले जाते हुए रहस्यवाद की अवस्था तक पहुंचा दिया है। यह अवस्था बयान करने से परे है। परम निधान की अवस्था एक रहस्य है, अनुभूति है, जिसका आनंद उठाया जा सकता है, बयान नहीं किया जा सकता। यह अवस्था प्रभु की कृपा होने पर ही प्राप्त होती है :

जिस नो हरि सुप्रसंनु होइ सो हरि गुणा रवै सो भगतु सो परवानु ॥ . . .

सो सतिगुरू सा सेवा सतिगुर की सफल है जिस ते पाईऐ परम निधानु ॥ (पन्ना ७३४)

आदर्श सेवक पर जब गुरु बख़्शिश करता है तो सेवक की केवल पृष्ठभूमि के पाप ही नहीं धुल जाते बल्कि वर्तमान एवं भविष्य भी रोशन हो जाते हैं। यहीं बस नहीं, सेवक की पीढ़ियां भी मुक्त हो जाती हैं। जिस प्रकार गुरमुख खुद संसार-समुद्र से पार हो जाता है और अपनी कई पीढ़ियों का भी उद्धार कर देता है, इसी प्रकार की अवस्था सेवक की है। सेवक से यमराज फिर लेखा नहीं मांगता। उसका आवागमन का चक्कर समाप्त हो जाता है :

मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविऐ लेखा छुटीऐ ॥ (पन्ना १७०)

गुरु जी का अन्य फरमान है कि सेवक का पांच कामादिकों से छुटकारा हो जाता है और उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मान-प्रतिष्ठा मिलती है :

आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणा सेवकु आपि हरि भावै ॥

आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥ (पन्ना ५५५)

सेवक का सेवा वाला कार्य बड़ा कठिन है। इस मार्ग पर चलने के लिए सिर हथेली पर रखना पड़ता है। पैर आगे बढ़ाकर फिर पीछे मुड़ने वाली बात नहीं। यह प्यार वाला रिश्ता तभी सिरे चढ़ सकता है यदि प्रभु की कृपा-दृष्टि हो। गुरु-कथन इस सिद्धांत की पुष्टि भली-भांति करता है। यह व्याख्या केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि गुरु साहिबान के जीवन-अनुभवों का वास्तविक प्रकटावा है :

गुर पीरां की चाकरी महां करड़ी सुख सारु ॥
नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु ॥
सतिगुर की सेवै लगिआ भउजलु तरै संसारु ॥
मन चिंदिआ फलु पाइसी अंतरि बिबेक बीचारु ॥
नानक सतिगुरि मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु ॥ (पन्ना १४२२)

ऐसे आदर्श सेवक का खाना, पीना, पहनना सब पवित्र है। उसका घर भी पवित्र है तथा वो मेहमान बनकर दूसरों का घर भी पवित्र कर देता है :

तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥

तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ (पन्ना ६४८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाईस वारें व नौं धुनियां

*-सिमरजीत सिंघ**

गतांक से आगे . . .

९. गउड़ी की वार महला ४ : भारतीय संगीत ग्रंथों में गउड़ी को गउरी, गौरी, गवरी, गौड़ी आदि नामों से लिखा गया है। प्राचीन राग होने के कारण इस राग के कई प्रकार हैं जैसे गउड़ी पूरबी, गउड़ी पूरबी दीपकी, गउड़ी दीपकी, गउड़ी माला, गउड़ी गुआरेरी आदि। गउड़ी उत्तरी भारतीय संगीत पद्धति तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में बहुत कम गाया/बजाया जाता है। गुरु साहिब ने इस राग का भरपूर प्रयोग किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस राग के बहुत रूप अंकित हैं। निश्चित ही प्राचीन रूप में यह राग काफी परिवार में रहा होगा, ऐसा इसके विकास से ही अंदाज़ा लग जाता है।

इस राग में ३३ पउड़ियां हैं, जिनमें से २८ पउड़ियां श्री गुरु रामदास जी की, ५ पउड़ियां श्री गुरु अरजन देव जी की हैं। आम तौर पर पउड़ियों की तुकों की संख्या पांच-पांच है। ग्यारहवीं पउड़ी की तुकें छः हैं तथा १२वीं व ३१वीं पउड़ी में तुकों की संख्या १०-१० है। इन पउड़ियों के साथ २-२ सलोक भी हैं। १५वीं तथा २०वीं पउड़ी के साथ ३-३ सलोक दर्ज हैं। इस प्रकार सलोकों की कुल संख्या ६८ है। इनमें से ७ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के, ५३ सलोक श्री गुरु रामदास जी के तथा ८ सलोक श्री गुरु अरजन देव जी के हैं। सलोकों की तुकों की संख्या २ से १४ तक है।

पउड़ियों तथा सलोकों में भावार्थ की एकता है। इसमें गुरमति के अनेक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥ (पन्ना ३०५)

१०. बिहागड़े की वार महला ४ : 'बिहागड़ा राग' उत्तरी भारती संगीत का मधुर राग है। इस राग को 'बिहाग' का उप अंग माना जाता है, जिसकी रचना बिहाग व खमाज के मिश्रण से हुई है।

श्री गुरु अमरदास जी की उच्चारण की इस वार में कुल २१ पउड़ियां हैं तथा प्रत्येक पउड़ी पांच तुकों की है परंतु तुकों का आकार एकसार नहीं है। प्रत्येक पउड़ी के साथ २-२ सलोक हैं। सिर्फ १२वीं पउड़ी के ३ सलोक हैं। इस प्रकार सलोकों की संख्या ४३ है। १२वीं पउड़ी वाले तीन सलोकों से पहले "सलोक मरदाना १" लिखा हुआ है। इन तीनों के अतिरिक्त बाकी ४० सलोकों में से २ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के हैं, एक सलोक भक्त कबीर जी का है। २ सलोक श्री गुरु रामदास जी के हैं, २ सलोक श्री गुरु अरजन देव जी के हैं तथा अन्य ३३ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के लिखे हुए हैं। सलोकों की तुकों की संख्या

**संपादक, गुरमति ज्ञान एवं गुरमति प्रकाश।*

एकसार नहीं है। २ से लेकर ११ तुकों तक के सलोक दर्ज हैं। इनकी भाषा साध-भाषा से प्रभावित पूरबी पंजाबी है। इस वार में बताया गया है कि परमात्मा की कृपा से जिज्ञासुयों के सारे बंधन काटे जाते हैं। माया का प्रभाव नष्ट हो जाता है तथा वो हरि-नाम में लीन हो जाता है। परमात्मा की सच्ची भक्ति के तुल्य कोई वस्तु या सहायक तत्व नहीं है :

जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ (पन्ना ५५५)

११. वडहंस की वार महला ४ : गुरमति संगीत पद्धति उत्तरी शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत का सुमेल है। गुरु साहिबान ने संगीत के इन दोनों गायन रूपों की गायन शैलियों, रागों व धुनियों का प्रयोग किया तथा प्रचार किया। लोक काव्य रूपों को किसी राग के अधीन करना गुरु साहिबान की विशेषता है। इससे सम्बंधित रागों में अंकित लोक काव्य रूप की धुन को, उस राग का प्रारंभिक स्वरूप भी माना जा सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग वडहंस के अधीन 'घोड़ीआं' जैसे लोक काव्य रूपों को अंकित किया गया है। इनके बिना शास्त्री संगीत की शैली ध्रूपद, धमार आदि में भी कई शबद अंकित किए मिलते हैं।

इस वार में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण की गईं २१ पउड़ियां हैं। इनके साथ कुल ४३ सलोक हैं। पहली के साथ तीन अन्य के साथ दो-दो सलोक हैं। इन सलोकों में दसवीं पउड़ी के साथ एक और बीसवीं पउड़ी के साथ दो सलोक श्री गुरु नानक देव जी के उच्चारण किए हुए हैं। अन्य ४० सलोक श्री गुरु अमरदास जी के हैं। सलोकों की तुकों की संख्या एकसार नहीं है। २ से लेकर १० सलोक हैं। इस वार में गुरु जी ने गुरमति के अनेक पक्षों पर अपने ढंग से व्याख्या कर प्रकाश डाला है।

१२. सोरठि की वार महला ४ : सोरठि राग के सम्बंध में श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं :

सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥
(पन्ना ६४२)

यह राग गंभीर प्रकृति का वैरागमयी राग है जो भक्ति भाव की रचनायों के लिए अति उत्तम है। 'सोरठि की वार' में कुल २९ पउड़ियां हैं जो श्री गुरु रामदास जी की उच्चारण की हुई हैं। प्रत्येक पउड़ी की पांच-पांच तुकें हैं, परंतु तुकों का आकार एकसार नहीं है। प्रत्येक पउड़ी के साथ दो-दो सलोक हैं। इस तरह इस वार में कुल ५८ सलोक हैं जिनकी तुकों की संख्या दो से लेकर आठ तक है। इनमें से ३ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के, १ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी का, ४७ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के तथा ७ सलोक श्री गुरु रामदास जी के है। इस वार में दर्शाया गया है कि परमात्मा की शरण में आने से सही सूझ (समझ) प्राप्त होती है। सांसारिक वस्तुओं की तृष्णा समाप्त हो जाती है।

१३. बिलावल की वार महला ४ : 'बिलावल' बहुत प्रसिद्ध तथा प्राचीन राग है। मध्यकालीन व आधुनिक प्रत्येक संगीत ग्रंथ में इसका वर्णन मिलता है, जिससे इसके अत्यंत लोकप्रिय होने का सबूत मिलता है।

वर्तमान थाट पद्धति को मानने वाले विद्वानों ने इस राग की रचना बिलावल थाट से हुई मानी है। यह अपने थाट का प्रमुख एवं जनक राग है। कई संगीत ग्रंथों में इसको हिंडोल की रागिनी लिखा हुआ है तथा कइयों ने इसको भैरव का पुत्र माना है। परंतु गुरमति संगीत

प्रणाली के आधार पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'बिलावल' ही लिखा गया है। इस राग में श्री गुरु रामदास जी की लिखी वार में कुल १३ पउड़ियां हैं। इनमें से १२ पउड़ियां ५-५ तुकों की हैं तथा दसवीं पउड़ी ६ तुकों की है। ये तुकें आकार में एक समान नहीं हैं। प्रत्येक पउड़ी के साथ दो-दो सलोक हैं, सिर्फ सातवीं पउड़ी के साथ ३ सलोक हैं। इन २७ सलोकों में से एक श्री गुरु रामदास जी का है। अन्य में से २ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के तथा २४ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के लिखे हुए हैं। इनमें २ से लेकर १० तुकें शामिल हैं।

इस वार में गुरु साहिब ने फरमान किया है कि सारे संसार की सृजना परमात्मा ने की है। मुख्य रूप से नाम-सिमरन ही मनुष्य की सात्विक कमाई है।

१४. सारंग की वार महला ४ : 'राग सारंग' भारती संगीत का प्राचीन लोकप्रिय राग है। इसकी रचना एक लोक गीत से हुई है। चरवाहों व सपेरों के लोक गीतों की धुनों में इस राग की झलक मिल सकती है।

इस वार में कुल ३६ पउड़ियां हैं जिनमें से ३५वीं पउड़ी की रचना श्री गुरु अरजन देव ने की हुई है तथा अन्य श्री गुरु रामदास जी की हैं। प्रत्येक पउड़ी में एकसार आकार की पांच-पांच तुकें हैं। इन पउड़ियों के साथ ७४ सलोक भी दर्ज हैं। इन सलोकों में से ३४ पउड़ियों के साथ दो-दो सलोक हैं। पहली व ३४वीं पउड़ी के साथ यह संख्या तीन-तीन है। इन ७४ सलोकों में से ३३ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के, ९ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी के तथा २३ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के हैं। ६ सलोक श्री गुरु रामदास जी के तथा ३ सलोक श्री गुरु अरजन देव जी के हैं। इन सलोकों की दो से लेकर ग्यारह तक तुकें हैं। भाषा सरल तथा पंजाबी के ज्यादा अनुरूप है।

इस वार में गुरु जी ने दर्शाया है कि परमात्मा द्वारा पैदा की माया के मोह-जाल में फंसकर मनुष्य अपने परमार्थिक कर्त्तव्य को भूल जाता है तथा दुखी होकर भटकता है। मनुष्य को धीरे-धीरे नाम जपने की आदत डालनी चाहिए जो मनुष्य के सही रूप में चलने में सहायक होती है :

जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ॥
नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ सन्ही उपरि चोर ॥ *(पन्ना १२४७)*

१५. कानड़े की वार महला ४ : 'कानड़ा' एक पुरातन राग है। भारती संगीत के प्रचलित रागों में यह एक अति गंभीर राग है। पुरातन ग्रंथकारों ने इस राग का उल्लेख 'करनाट' नाम से किया है। अकबर के दरबारी गायक तानसेन ने कानड़ा राग को काफी सुंदर ढंग से गाया, जिस कारण इसका नाम दरबारी कानड़ा पड़ गया था। गुरमति संगीत पद्धति में इस राग को कानड़ा ही कहा गया है। राग कानड़ा आधुनिक संगीत में कई रूपों में प्रचलित है।

इस वार में पांच-पांच तुकों की १५ पउड़ियां हैं। प्रत्येक पउड़ी में २-२ सलोक दर्ज हैं। इस वार में पउड़ियों की तरह सारे सलोक भी श्री गुरु रामदास जी के उच्चारण किए हुए हैं। ये सलोक दो तुकों से लेकर सात तुकों तक हैं। पउड़ियों की भाषा का स्वरूप पूरबी पंजाबी वाला है तथा इस पर साध-भाषा का प्रभाव स्पष्ट होता है किंतु सलोक लहंदी पंजाबी के प्रभाव तले हैं। इस वार में गुरु साहिब दर्शाते हैं कि हर प्रकार की सृष्टि की रचना परमात्मा ने खुद की है तथा वो खुद ही इसमें व्यापक है। भक्ति व नाम-सिमरन से जन्म-जन्मांत्रों के पाप

धुल जाते हैं :

कोई गावै को सुणै को उचरि सुनावै ॥
जनम जनम की मलु उतरै मन चिंदिआ पावै ॥
(पन्ना १३१८)

१६. गउड़ी की वार महला ५ : इस वार में पांच-पांच तुकों की कुल २१ पउड़ियां हैं तथा प्रत्येक पउड़ी के साथ २-२ सलोक हैं। यह सलोक श्री गुरु अरजन देव जी के लिखे हुए हैं। इस तरह कुल ४२ सलोक इस वार में हैं। इस वार में ३६ सलोक दो तुके हैं, तीन चार तुके, दो पांच तुके तथा एक सलोक आठ तुका हैं। १९वीं पउड़ी में दर्ज पहले सलोक के साथ 'डखना' शब्द लिखा हुआ है। इस पउड़ी के दोनों सलोक तथा २०वीं पउड़ी का पहला सलोक दोनों लहंदी भाषा में हैं। अन्य सलोक तथा पउड़ियां साध-भाषा प्रभावित पूरबी पंजाबी में लिखी गई हैं।

इस वार में गुरु जी ने गुरमति के प्रमुख सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए फरमान किया है कि परमात्मा सर्व-शक्तिमान है। मनुष्य को श्रेष्ठ बनने के लिए साध-संगत में जाना अति आवश्यक है। नाम-सिमरन से साधक की शख़्सियत एकदम बदल जाती है :

तिंना भुख न का रही जिस दा प्रभु है सोइ ॥
नानक चरणी लगिआ उधरै सभो कोइ ॥
(पन्ना ३२३)

१७. गूजरी की वार महला ५ : 'गूजरी' एक पुरातन राग है। इसका सुरात्मक स्वरूप करुणा रस का धारक है, जिस कारण यह गंभीर प्रकृति की भक्ति भाव वाली रचनाओं के गायन के लिए अति उत्तम है। राग गूजरी, तोड़ी का नमूना है, इसी कारण कई संगीत प्रेमी इसको 'गूजरी तोड़ी' भी कहते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित इस वार में कुल २१ पउड़ियां हैं। प्रत्येक पउड़ी में आठ-आठ तुकें हैं परंतु २०वीं पउड़ी की कुल पांच तुकें हैं। प्रत्येक पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी के दो-दो सलोक हैं। इन सलोकों में से ३७ सलोक दो-तुके हैं तथा दोहरे के आकार के हैं। पांच सलोकों की तुकें दो से ज्यादा सात तक हैं। सलोकों की भाषा लहंदी पंजाबी है परंतु पउड़ियों पर साध-भाषा के प्रभाव वाली पूरबी पंजाबी का प्रभाव है। इस वार की अनेक तुकें 'सति' कथन का रूप धारण कर गई हैं।

गुरु जी ने इस वार में मुख्य रूप से परमात्मा तथा गुरु की महिमा का व्याख्यान किया है। जीव अपनी साधना द्वारा ऊंचा उठकर सच्ची दरगाह पर प्रवान चढ़ता है। इसके अतिरिक्त गुरमति के अन्य कई सिद्धांतों पर भी रौशनी डाली गई है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ *(पन्ना ५२२)*

१८. जैतसरी की वार महला ५ : 'राग जैतसरी' बहुत पुरातन राग है। पूरबी अंग के रागों में इसका विलक्षण तथा असाधारण स्वरूप है। इस राग की रचना जोत तथा सिरी राग के मधुर संयोग से हुई है।

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चारण की इस वार की कुल २० पउड़ियां हैं। प्रत्येक पउड़ी की पांच-पांच तुकें हैं। प्रत्येक पउड़ी के साथ २-२ सलोक हैं। सारे सलोक २-२ तुकों के 'दोहिरा सोरठा तोल' पर लिखे गए हैं सिवाए १२वीं पउड़ी के पहले सलोक के जो कि ३ तुकों का है।

इस वार में चाहे गुरमति के अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है परंतु विशेष रूप से

परमात्मा के नाम-सिमरन, माया के प्रपंच से मुक्त होने तथा अच्छे गुण प्राप्त करने की प्रेरणा की है।

१९. रामकली की वार महला ५ : 'रामकली की वार' श्री गुरु अरजन देव जी की उच्चारण की हुई है। इस वार में आठ-आठ तुकों की २२ पउड़ियां हैं। प्रत्येक पउड़ी के साथ दो-दो सलोक श्री गुरु अरजन देव जी के हैं। इस तरह सलोकों की कुल संख्या ४४ है। सलोकों की तुकों में समानता नहीं है। पहली तीन पउड़ियों में दर्ज सलोकों की चार-चार तुकें हैं। अन्य पउड़ियों में दर्ज सलोकों की संख्या २ से १६ तुकों तक है। इनमें से १९वीं पउड़ी में दर्ज दूसरा सलोक तथा २०वीं पउड़ी के साथ दर्ज सलोक भक्त कबीर जी प्रति तथा २१वीं पउड़ी के साथ दर्ज सलोक भक्त फ़रीद जी प्रति श्री गुरु अरजन देव जी के उच्चारण किए हुए हैं। इस वार की भाषा पूरबी पंजाबी है तथा साध-भाषा का प्रभाव भी है। कहीं-कहीं लहंदी शब्दावली का प्रभाव भी मिलता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने इस वार में गुरमति के अनेक पक्षों पर रौशनी डाली है। इसमें विशेष रूप से 'चित' की स्थिरता पर बहुत बल दिया गया है।

२०. मारू वार महला ५ : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा लिखी 'मारू वार' में आठ-आठ तुकों की कुल २३ पउड़ियां हैं। प्रत्येक पउड़ी के साथ तीन-तीन सलोक दर्ज हैं। ये सारे सलोक भी श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चरित हैं तथा इनमें दो-दो तुकें हैं। सिर्फ २१वीं तथा २२वीं पउड़ी के साथ दर्ज तीसरा सलोक तीन-तीन तुकों का है। सलोकों की भाषा लहंदी प्रधान है। सलोकों के शुरू में 'डखणे' पद भी लिखा है। पउड़ियों की भाषा साध-भाषा प्रभावित पूरबी पंजाबी है। गुरु जी ने इस वार में गुरमति के कई ढंगों की व्याख्या की है।

२१. बसंत की वार महला ५ : 'बसंत' बहुत ही पुरातन तथा प्रसिद्ध राग है। इस राग का बसंत ऋतु से घनिष्ठ सम्बंध है। इसको मौसमी या ऋतुकालीन राग माना जाता है। बसंत राग की रचना पूरबी सुमेल से हुई मानी जाती है। इसमें रिश्भ, धैवत कोमल, मध्यम दोनों तथा अन्य सभी सुर शुद्ध प्रयोग होते हैं। इस आरोह में रिश्भ तथा पंचम सुर नहीं लगते। बसंत ऋतु में हर समय तथा अन्य ऋतुओं में इसका समय आधी रात के बाद माना जाता है। संगीतकारों ने इसको गंभीर प्रकृति का राग माना है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज इस वार की ३ पउड़ियां हैं। प्रत्येक पउड़ी की पांच-पांच तुकें हैं। इस वार में केवल पउड़ियां ही हैं, सलोक नहीं हैं। इस वार में गुरु जी ने उपदेश दिया है कि वाश्नायें त्यागकर नाम-सिमरन में लीन रहना चाहिए। ऐसा करने से जीव का परमात्मा से एकाकार हो जाता है।

२२. रामकली की वार-- भाई सत्ता जी तथा भाई बलवंड जी : रामकली की वार 'राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी' के नाम तले श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ९६६ पर दर्ज है। भाई बलवंड जी तथा भाई सत्ता जी गुरु दरबार के रबाबी थे तथा श्री गुरु अरजन देव जी के हजूर कीर्तन किया करते थे। इस वार में उनके द्वारा गुरु-घर की प्रशंसा की गयी है। इस पूरी वार में एक ही विचार घूम रहा है कि "गुरु की अपने शिष्य के समक्ष रहिरास" पूरी वार का यही केंद्रीय भाव है। इस वार की कुल आठ पउड़ियां हैं। पहली तीन पउड़ियां भाई बलवंड जी की उच्चारण की हुई हैं तथा अंतिम पांच पउड़ियां भाई सत्ता जी की हैं। वार की पहली

पउड़ी में कहा गया है कि श्री गुरु नानक देव जी ने धर्म का एक नयी किस्म का राज्य चलाया है। उन्होंने अपने गुरसिक्ख भाई लहिणा जी को अपने जैसा बनाकर उनके समक्ष माथा टेका :

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ . . .
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥
(पन्ना ९६६)

दूसरी एवं तीसरी पउड़ी में भी भाई बलवंड जी इसी बात को हैरान होकर कहते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी शरीर बटाकर श्री गुरु अंगद देव जी के स्वरूप में गुरगद्दी पर आसीन हुए हैं :

नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ (पन्ना ९६७)

भाई बलवंड जी फरमान कर रहे हैं कि भाई लहिणा जी के अंदर श्री गुरु नानक देव जी वाली ज्योति है, जीवन का ढंग भी वही है, श्री गुरु नानक देव जी ने सिर्फ शरीर ही बदला है :

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ (पन्ना ९६६)

श्री गुरु नानक देव जी के नये धर्म-रास्ते को विचारकर भाई सत्ता जी भी हैरान होते हैं। वार की चौथी पउड़ी में वो फरमान करते हैं कि जगत के नाथ श्री गुरु नानक देव जी ने तो अन्य दिशा की ओर ही गंगा बहा दी है :

होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥
(पन्ना ९६७)

वार की छठी पउड़ी में भाई सत्ता जी श्री गुरु अमरदास जी बाबत आश्चर्य वाली मर्यादा का ज़िक्र करते हुए फरमान करते हैं :

सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ (पन्ना ९६८)

भाई सत्ता जी फरमान करते हैं कि पोते अर्थात् श्री गुरु अमरदास जी के मस्तक पर भी वही नूर है, वही तख़्त है तथा वही दरबार है जो श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अंगद देव जी का था। सातवीं पउड़ी में भाई सत्ता जी चौथी पातशाही श्री गुरु रामदास जी को मुख्य कर अपने विचार इस प्रकार प्रकट करते हैं :

नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥
(पन्ना ९६८)

अंतिम पउड़ी में भाई सत्ता जी श्री गुरु अरजन देव जी के सम्बंध में फरमान करते हैं :

तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥
उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥
(पन्ना ९६८)

अंत में गुरु साहिबान की महिमा बयान करते हुए वार को निम्नांकित शबद से समाप्त किया गया है।

चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥
(पन्ना ९६८)

अर्थात् चारों गुरु साहिबान अपने अपने समय रौशन हुए तथा वाहिगुरु खुद ही उनमें प्रकट हुआ है।

इन उपरोक्त वारों को निर्धारित रागों पर आधारित गाने के साथ-साथ इनमें से नौ वारों को विशेष प्रकार की धुनियों के अनुसार गाने की हिदायत की गई है। *क्रमशः . . .*



बंदी छोड़ दाता और बंदी छोड़ दिवस

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

पंच तत्वों के सुयोग से रचित इस मानव शरीर के महत्त्व को गुरमति में प्रमुखता से स्थापित किया गया है। यह तन धर्म-तत्व को पाकर आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाने के लिए प्राप्त हुआ है। इसलिए इसके सदुपयोग पर बार-बार बल दिया गया ताकि मनुष्य अपने जीवन के अर्थ और लक्ष्य को समझने में कोई चूक न करे :

इहु सरीरु करम की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु कढईआ ॥
लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भांडै भाउ पवै तितु अईआ ॥ *(पन्ना ८३४)*

जीवन तभी सफल है यदि उसमें परमात्मा के नाम का प्रकाश व्याप्त हो रहा है और परमात्मा के रहस्य को निकटता से जानते हुए मनुष्य शुभ कर्म करके परमात्मा की प्रतीति को अपने मन में बसा रहा है। शुभ कर्मों की नवेली व्याख्या सिक्ख गुरु साहिबान ने की जो प्रचलित धारणा से एकदम भिन्न थी। पांच विकारों से विरत होकर विनम्रता और सहज भाव से दीन-दुखियों का हित करना, निर्विकार, निर्लिप्त रहकर सरबत्त के भले की कामना करना और इसके लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देने को तत्पर रहना तथा मन में परमात्मा के प्रेम व समर्पण को बनाये रखते हुए उस पर हर हाल में अटूट आस्था रखना। मन में परमात्मा के विश्वास को विचलित न होने देना और सहज भाव से सरबत्त के भले के लिए कार्यशील होना ही जीवन को मथ-मथ कर परमात्मा-तत्व को पा लेना है। सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन पर नज़र डालें तो यही प्रेरणा मिलती है। यदि पिता-गुरु श्री गुरु अरजन देव जी को बंदी बनाकर शहीद कर दिया जाता है तो पुत्र-गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने जीवन में सहजता व विश्वास बनाये रखते हुए (ग्वालियर के किले से) बंदियों को मुक्त कराते हैं। मन में परमात्मा के नाम का प्रकाश व्याप्त हो तो कोई दुराग्रह कोई प्रतिशोध यहां तक कि कोई कुविचार भी नहीं पनप सकता। जिस बादशाह जहांगीर ने श्री गुरु अरजन देव जी को हिरासत में लिया और उनको शहीद करवाया, उसी जहांगीर ने जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया तो बिना किसी दुराग्रह के गुरु साहिब ने उसे स्वीकार किया और जहांगीर की जान भी बचाई। इसके बाद भी मन में कपट रखकर जहांगीर ने उन्हें कैद कर लिया और ग्वालियर के किले में भेज दिया।

इससे पूर्व श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सिक्खों में वीर रस भरकर उन्हें युद्ध-कला में प्रवीण होने की राह दिखा चुके थे और फौज का गठन भी कर चुके थे। उन्होंने सिक्ख संगत को घोड़े और अस्त्र-शस्त्र भेंटस्वरूप लाने का आदेश भी दे दिया था। सिक्ख उनकी इस राह पर भरपूर उमंग और उत्साह के साथ चल पड़े थे। इसके बावजूद गुरु साहिब ने कोई प्रतिकार नहीं किया

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: +९१९४१५९-६०५३३*

और ग्वालियर के किले में रहने लगे। परमात्मा का हुक्म मानकर उस हुक्म के अंदर रहना एक ऐसा उदाहरण था जिसे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ही स्थापित कर सकते थे। गुरु साहिब को ग्वालियर के किले में भेजने की बात आगरा में हुई, जहां गुरु साहिब के साथ उनकी सेना भी मौजूद थी। सेना के विरोध के बावजूद गुरु साहिब ने शांत रहने की सलाह दी और सेना को वहीं रहने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि परमात्मा यही चाहता है :

अंजनु तैसा अंजीऐ जैसा पिर भावै ॥
समझै सूझै जाणीऐ जे आपि जाणावै ॥
आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवए ॥
करम सुकरम कराए आपे कीमति कउण अभेवए ॥
(पन्ना ७६६)

उपरोक्त वचन श्री गुरु नानक साहिब का है जिससे उन्होंने स्वयं को परमात्मा के अनुकूल कर लेने की प्रेरणा व शिक्षा दी है ताकि मनुष्य शुभ कर्म कर सके। यही संदेश श्री हरिगोबिंद साहिब ने अपनी सेना और सिक्ख संगत को दिया और एक महान पराक्रमी योद्धा होने के बावजूद ग्वालियर किले में जाना स्वीकार किया क्योंकि वहां एक और बड़ा कार्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा था जिसे बस वे ही पूरा कर सकते थे :

अंध कूप ते काढनहारा ॥
प्रेम भगति होवत निसतारा ॥
साध रूप अपना तनु धारिआ ॥
महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ (पन्ना १००५)

ग्वालियर के किले में बड़ी संख्या में ऐसे राजा-महाराजा कैद थे जिनका राज्य जहांगीर ने हथिया लिया था। राजाओं को बड़ी ही दयनीय स्थिति में जेल में अपना जीवन गुज़ारना पड़ रहा था। उनके शरीर क्षीण और रोगी हो चुके थे। किले से छूटने की कोई उम्मीद न होने के कारण उनमें गहरी निराशा थी। इन लोगों ने जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के किले में आने की बात सुनी तो एक दम खिल उठे। उन्हें गुरु साहिब में अपना उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता दिखा। वे आशान्वित हो उठे कि अब वे यहां से रिहा होकर अपने घर-परिवार में वापिस लौट सकेंगे :

सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥
भेटत संगि हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥
हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥
हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता ॥
हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥
हरि संगि राते पूरन आस ॥ (पन्ना २०१)

गुरु साहिब ने ग्वालियर के किले में पहुंचने पर सबसे पहला कार्य बंदी राजाओं के खान-पान और सुविधाओं में सुधार का किया। बंदियों को अच्छा खाना और साफ़-सुथरे वस्त्र मिलने लगे। गुरु साहिब ने उन्हें आध्यात्मिक चेतना प्रदान की। गुरु जी अपना अधिकांश समय परमात्मा के सिमरन में बिताने लगे। वे बहुत थोड़ा भोजन करते थे और वह भी सिक्खों की मेहनत की कमाई से लाये गये खाद्यान्न का। सिक्ख संगत उनकी कैद से विचलित हो उठी और दर्शन के लिए ग्वालियर पहुंचने लगी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सबको समझाकर धैर्य और सहजता रखने का उपदेश दिया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब लगभग दो वर्ष तक ग्वालियर के किले में जहांगीर की कैद में रहे। यह एक तरह से सिक्खों की तैयारी, परीक्षा और आत्मिक उत्थान का काल था। जिस जहांगीर ने गुरु साहिब को कैद किया उसी जहांगीर को कुछ समय पूर्व गुरु साहिब ने शेर के हमले से बचाया था और शेर को अपनी कृपाण से दोफाड़ कर दिया था। गुरु साहिब का

सहज भाव से ग्वालियर जाना और सिक्ख संगत को भी सहज रहने का उपदेश देना *"ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥"* पर खरे उतरने जैसा था। ग्वालियर के किले की जेल में जाकर भी परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना परमात्मा में ध्यान लगाना, अल्प आहार लेना और किले के वातावरण को ही बदल देना *"ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥ जैसे मैलु न लागै जला ॥"* को सिद्ध कर देना था कि परमात्मा में रम कर कहीं भी सदा आनंदित रहा जा सकता है। *"ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥"* पर चलकर उन्होंने सभी बंदी राजाओं को अपनी शरण में लिया, कोई भेदभाव नहीं किया। अल्प भोजन, अधिक सिमरन करके गुरु साहिब ने *"ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥"* को प्रमाणित किया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की ग्वालियर हिरासत के कारण उनके दर्शन और सतसंग से वंचित सिक्ख तो दुखी थे ही अन्य लोग यहां तक कि ईमानपरस्त मुसलमान भी बेचैन थे। गुरु साहिब को रिहा करने की बात उठने लगी। जब शाही दरबार में इस पर गंभीर चर्चा हुई तो जहांगीर ने गुरु साहिब को रिहा करने का आदेश दे दिया। यह आदेश जब ग्वालियर पहुंचा तो अन्य बंदी राजा दुखी हो उठे। गुरु साहिब ने अपने साथ उन राजाओं को भी रिहा करने की मांग की। गुरु जी की बात इस शर्त के साथ मानी गयी कि जितने लोग उनका दामन थामकर बाहर जा पायेंगे उतने ही छोड़े जायेंगे। गुरु साहिब ५२ कलियों का चोला पहनते थे। राजाओं ने उनके चोले की एक-एक कली पकड़ ली। इस तरह सभी बावन राजा जो ग्वालियर किले में कैद होकर वर्षों से दुर्दशा में रह रहे थे एक बार ही मुक्त होकर बाहर आ गये। यह राह थी *"ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥ ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥"*

परमात्मा में जैसे गुणों की हम आशा करते हैं और उससे जैसे निर्णयों की उपेक्षा होती है, वे सारे गुण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब में दिखाई दिये और वैसे ही निर्णय उन्होंने लिए जिससे सबका हित हुआ।

ग्वालियर से गुरु साहिब दिल्ली आये। वहां उनसे मिलने जहांगीर आया और उसने अपने कृत्य पर अफसोस ज़ाहिर किया। उसने गुरु साहिब से मित्रता कर ली। गुरु साहिब ने उसकी मित्रता स्वीकार कर ली क्योंकि *"ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥"* गुरु साहिब के लिए तो कैद होना और छूटना परमात्मा की इच्छा में था। बावन राजाओं को कैद से छुड़वाने के कारण उन्हें 'बंदी छोड़ दाता' का नाम दिया गया।

भारी विस्माद होता है ऐसे पराक्रमी और महाबली योद्धा का शांत-आनंद स्वरूप जीवन पढ़कर जिन्होंने अपने जीवन में (आगे चलकर) चार युद्ध लड़े, सब में विजय प्राप्त की और सिक्खों के मनोबल को ऊपर उठाया।

श्री अमृतसर पहुंचने पर भारी संख्या में सिक्ख संगत उनके दर्शन करने आयी। उनके द्वारा स्थापित 'अकाल बुंगा' जिसे आजकल 'श्री अकाल तख़्त साहिब' के नाम से जाना जाता है, पर बाबा बुड्ढा जी ने अरदास करके परमात्मा का आभार व्यक्त किया। गुरु जी का श्री अमृतसर पहुंचने का वो शुभ दिन था जिस दिन दीवाली थी। सिक्खों ने दीवाली को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया। दीये जलाकर रोशनी की गई, आतिशबाज़ी हुई। संगत ने मिठाइयां

बांटकर गुरु-आगमन की खुशी को दोगुना कर दिया। इसी दिन से प्रचलित हुआ 'बंदी छोड़ दिवस' को मनाना, जो संदेश देता है कि जहां बाहरी रूप से दीये जलाकर जहान को रौशन करना है वहीं गुरु-ज्ञान की ज्योति अपने अंत: करण में प्रज्वलित कर अपने ज्ञान-दीपक को भी प्रदीप्त करना है।

वास्तव में गुरु जी बावन राजाओं के लिए ही 'बंदी छोड़ दाता' नहीं थे वे समस्त सिक्ख संगत के 'बंदी छोड़ दाता' थे, संगत को विकारों, उद्वेगों के बंधनों से मुक्त करने वाले थे। यहां तक कि वे सिक्ख धर्म के शिखर विद्वान भाई गुरदास जी को अहम् के बंधन से मुक्त करने वाले दाता भी बने। अपने प्रिय सिक्खों को शोक के बंधन से भी मुक्त, उन्होंने अपने अंतिम समय में यह आदेश देकर किया कि उनके परलोक गमन के बाद शोक नहीं खुशी मनायें क्योंकि वे अपनी जीवन-यात्रा सफल कर अपने स्थायी घर (प्रभु के पास) जा रहे हैं। इस तरह उन्होंने जनसाधारण के सांसारिक मोह-माया के सारे बंधन काटकर उन्होंने निवृत्त किया :

सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ (पन्ना २८६)

सतिगुरु की महिमा वर्णन से परे है। हमारे सारे दुखों-कष्टों का कारण हमारी अज्ञानता है जिससे हम परमात्मा के मार्ग पर चल नहीं पा रहे हैं। इस अज्ञानता को सतिगुरु ही दूर कर सकता है और हमारे पैरों में पड़ी विकारों, मोह-माया की बेड़ियां काटकर हमें मुक्त कर सकता है। 

कविता

मेरे अमृत गुरुदेव !

मेरे अमृत गुरुदेव !
मेरे अमृत दातार !
मेरे दशम गुरुदेव !
मेरे परम पिता !
मेरी धर्म सत्ता !
मैं भटक जाता !
मैं फिसल जाता !
मेरा पंथ अति उत्तम !
मेरा पंथ अति उज्ज्वल !
मेरे पांव कमज़ोर
मेरा निश्चय कच्चा
मुझे घेर लेता
मेरा अपना भवजल !
मेरे परम पिता !
मुझे शक्ति दे !
मुझे भक्ति दे !
मन हो जाए निश्छल !
तन हो जाए निर्मल !
खत्म हो जाए भटकन !
समाप्त हो जाए फिसलन !
मेरे अमृत दातार !
मेरे अमृत पिता !
साधनारत रहे तन-मन !
कर दे कृपा !
कर दे बख़्शन !

-डॉ सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो ९४१७१-७५८४६

ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

माननीय ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी ऐसे महान व्यक्ति हैं, जिनका नाम लेते ही प्यार और सत्कार से सिर अपने आप झुक जाता है। बाबा बुड्ढा जी को सिक्खी श्री गुरु नानक देव जी से मिली। छोटी उम्र में बूड़े से "बाबा बुड्ढा जी" बने इस महान संत की बात दुनिया से न्यारी है। अकाल पुरख ने आप जी को इतना ऊंचा रुतबा बख़्शिश किया कि आपको पांच गुरु साहिबान को गुरगद्दी पर विराजमान करने का सम्मान मिला। प्रथम गुरु साहिबान के प्रत्यक्ष दर्शन-दीदारे उनके साथ बचन-बिलास, संगत और सेवा-सिमरन करने का सौभाग्य बाबा बुड्ढा जी को प्राप्त हुआ। नाम-सिमरन और गुरु-हुक्म कमाने की कड़ी कमाई अपने आप में मिसाल है। गुरु दरबार के हर महत्त्वपूर्ण कार्य में बाबा बुड्ढा जी की सलाह ली जाती थी।

बाबा जी का जन्म ७ कार्तिक संवत् १५६३ को श्री अमृतसर ज़िले के गांव कत्थूनंगल में भाई सुग्घा (रंधावा) जी और माता गौरां जी के पावन गृह में हुआ। आप जी का पूरा परिवार कत्थूनंगल को छोड़कर रमदास नामक नगर में आ गया। रमदास में ही आप जी की संगत (मिलाप) जगत गुरु श्री गुरु नानक देव जी से हुई। उस समय आप जी की उम्र लगभग १२ वर्ष की थी। छोटी उम्र में आपके मुंह से बूढ़ों (बुजुर्गों) जैसी ज्ञान की बातें सुनकर गुरु जी ने आपको "बूड़े से बुड्ढा" होने का आशीर्वाद दिया था। आप जी की धर्म पत्नी का नाम बीबी मिरोआ जी था। आप जी के घर चार पुत्र पैदा हुए।

बाबा बुड्ढा जी ज़िमींदार परिवार से संबंध रखते थे। आप जी के पूर्वज़ लगभग दो दर्जन गांवों के मालिक थे। श्री हरिमंदर साहिब की रचना एवं अमृत सरोवर की खुदाई में निगरानी की जिम्मेदारी गुरु साहिबान ने आपको बख़्शी हुई थी। गुरु-घर के सभी प्रकार के सेवा कार्यों के साथ-साथ आप जी का हर सुवास नाम-सिमरन और गुरबाणी में ही रंगा हुआ रहता था। गुरु-हुक्म और गुरबाणी आप जी की ज़िंद-जान थी। श्री गुरु अरजन देव जी ने आपको श्री हरिमंदर साहिब का पहला ग्रंथी नियुक्त किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरगद्दी पर बिठाते समय आप जी ने उन्हें मीरी और पीरी की दो कृपाणें पहनाईं। श्री गुरु अरजन देव जी के हुक्म में आप जी कुछ समय गुरु-घर की सेवा-संभाल के लिए गांव ठट्ठा (बीड़ साहिब) चले गए थे। जीवन के अंतिम समय में छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से आज्ञा लेकर आप जी रमदास आ गए थे। उस समय बाबा जी की उम्र लगभग १२५ वर्ष हो चुकी थी और शरीर भी वृद्ध हो चुका था। बाबा बुड्ढा जी के अकाल चलाना करने के समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब विशेश रूप से रमदास पहुंचे थे। बाबा जी सारी उम्र गुरु-घर के सेवक बनकर रहे। नि:संदेह बाबा बुड्ढा जी ब्रह्मज्ञानी थे। 

*पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१; मो. +९१९८५५८५१०१४

सुलतान-उल-कौम सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया

*-डॉ. राजेंद्र सिंह 'साहिल'**

अठारहवीं शताब्दी के सिक्ख अपनी अनुपम वीरता, आदर्श आचरण एवं पवित्र विचारधारा के कारण सिक्ख इतिहास के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व माने जाते हैं। इस दौर के महान् सिक्ख योद्धाओं में एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण नाम सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया का है। आपके कुशल नेतृत्व एवं सेनानायकत्व में सिक्ख शक्ति पंजाब तथा उत्तर भारत में और मज़बूत होकर उभरी। आहलूवालिया मिसल की स्थापना करके आपने सिक्ख-शक्ति को और भी स्थायित्व प्रदान किया।

जन्म एवं बाल्यावस्था : सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया का जन्म 'पंजाब कोश' के अनुसार ३ मई १७१८ ई. को लाहौर के गांव आहलू में हुआ। आपके पिता का नाम सरदार बदर सिंह था जो सरदार कपूर सिंह फैज़लपुरिया के साथी थे। आहलू गांव लाहौर से पांच कोस या आठ किलोमीटर की दूरी पर था। इस गांव को सरदार बदर सिंह के पड़दादा सरदार साधू सिंह या सद्दा सिंह ने ही स्थापित किया था।

सन् १७२३ ई. में जब सरदार जस्सा सिंह अभी मात्र पांच वर्ष के ही थे, आपके पिता सरदार बदर सिंह अकाल चलाना कर गए। ऐसे में मां और पुत्र अकेले रह गए।

माता सुंदरी जी के आश्रय में : पिता के देहांत के बाद सरदार जस्सा सिंह को कुछ दिन संघर्षों में बिताने पड़े। माता आपको निरंतर गुरबाणी पठन-अध्ययन में रत रखती। उन्हीं दिनों 'दल खालसा' श्री अमृतसर साहिब में एकत्र हुआ। माता सरदार जस्सा सिंह को साथ ले सिंघों के दर्शन करने वहां आई। मां-पुत्र का गुरबाणी-प्रेम देखकर सरदार कपूर सिंह फैज़लपुरिया अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने सरदार जस्सा सिंह को अमृत छकाकर खालसा बना दिया।

दशमेश पिता की सुपत्नी माता सुंदरी जी उन दिनों दिल्ली में थीं। सरदार जस्सा सिंह को साथ लेकर इनकी मां माता सुंदरी जी के पास आ गई और उनके आश्रय में रहने लगी। होनहार सरदार जस्सा सिंह पर माता सुंदरी जी का विशेष स्नेह हो गया। इस प्रकार सरदार जस्सा सिंह को यहां ऊंचे स्तर की शिक्षा-दीक्षा मिलने लगी। सरदार जस्सा सिंह ने यहीं अध्ययन किया और युद्ध-कला व शस्त्र-संचालन सीखा। सरदार जस्सा सिंह एवं इनकी माता लगभग दस वर्षों तक माता सुंदरी जी के आश्रय में रहे। माता सुंदरी जी ने सरदार जस्सा सिंह को आशीर्वाद दिया और एक 'गुर्ज' बख़्शी।

नवाब कपूर सिंह के संरक्षण में : सन् १७३३ ई. में सरदार जस्सा सिंह अपने मामा सरदार भाग सिंह एवं माता के साथ पंजाब वापस आ गए। माता सुंदरी जी का आदेश था कि अब सरदार जस्सा सिंह की ज़िम्मेदारी नवाब कपूर सिंह संभालेंगे। जलंधर में सरदार जस्सा सिंह नवाब कपूर सिंह से मिले। वे सरदार जस्सा सिंह को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। माता सुंदरी जी की आज्ञा अनुसार उन्होंने सरदार जस्सा

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: +९१९४१७२-७६२७१*

सिंघ को अपने संरक्षण में ले लिया। यहां रहकर युवा सरदार जस्सा सिंघ ने बड़े परिश्रम से अपने व्यक्तित्व का विकास किया। गुरबाणी-पाठ, सेवा, शस्त्र-विद्या का अभ्यास उनकी नित्य की क्रिया थी। नवाब कपूर सिंघ ने उन्हें घोड़ों के दाने-पानी की सेवा पर नियुक्त किया था। मन-वचन और कर्म से श्रेष्ठ आचरण करते हुए ये उत्तम नाम-अभ्यासी और शूरवीर योद्धा बन गए।

युवा सरदार जस्सा सिंघ सन् १७३३ से लेकर १७५३ ई तक नवाब कपूर सिंघ की संगत में रहे और उनके साथ अनेक युद्धों एवं जंगी मुहिमों में भाग लिया। इन युद्धों में सन् १७४६ ई में काहनूवान में घटित 'छोटा घल्लूघारा' भी शामिल है। यहां सरदार जस्सा सिंघ ने अद्भुत वीरता का परिचय दिया।

आहलूवालिया मिसल की जत्थेदारी : सन् १७४८ ई में जब वैसाखी के अवसर पर श्री अमृतसर साहिब में बुलाए गए सरबत्त खालसा में मिसलों की स्थापना की गई तो सरदार जस्सा सिंघ को आहलूवालिया मिसल का जत्थेदार नियुक्त किया गया। सरदार जस्सा सिंघ के नेतृत्व में आहलूवालिया मिसल ने बड़ी तेज़ी से उन्नति की और यह एक बड़ी शक्ति बनकर उभरी।

सन् १७४८ ई. में ही सरदार जस्सा सिंघ और इनके जत्थे ने श्री अमृतसर के हाकिम सलाबत ख़ान को मारकर नगर और आस-पास के इलाके पर कब्ज़ा कर लिया। सन् १७४९ ई. में मुलतान के हाकिम शाहनवाज़ को खारिज़ करने के लिए सरदार जस्सा सिंघ ने दीवान कौड़ा मल की भारी सहायता की। इसी तरह सन् १७५३ ई. में जलंधर के हाकिम अदीना बेग को हराकर फ़तेहाबाद के परगने पर अधिकार किया।

सिक्खों का नेतृत्व : सन् १७५३ ई में अपने अकाल चलाने के समय नवाब कपूर सिंघ फैज़लपुरिया ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को सिक्खों का नेतृत्व सौंप दिया। नवाब कपूर सिंघ ने सरदार जस्सा सिंघ को उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की एक कृपाण दी जो उन्हें माता सुंदरी जी ने बख़्शी थी। यह कृपाण आज भी कपूरथला रियासत के संग्रहालय में सुरक्षित है।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में सिक्खों ने बहुत बड़ी-बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की। सन् १७५७ ई में बाबा दीप सिंघ जी ने श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा के लिए बलिदान दिया था। बाबा जी के इस कार्य को सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने पूरा किया। उन्होंने पहले अब्दाली के पुत्र तैमूर और सेनापति जहान खां को काबुल तक खदेड़ा और फिर वापस आकर पुन: श्री हरिमंदर साहिब की कार सेवा करवाई।

अफगान आक्रमणकारी अहमदशाह अब्दाली ने सन् १७४७ ई से लेकर १७६७ ई तक उत्तर-पश्चिम भारत पर पच्चीसों हमले किए। इन हमलों के दौरान अब्दाली बहुत सारा धन लूटकर और हज़ारों स्त्री-पुरुषों को गुलाम बनाकर अपने साथ ले जाया करता था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में सिक्ख निरंतर अब्दाली की सेना पर छापामार युद्ध-शैली में आक्रमण करते और स्त्री-पुरुषों को छुड़ाकर ले आते। इस प्रकार उन्होंने हज़ारों स्त्री-पुरुषों को मुक्त करवाया।

बड़ा घल्लूघारा : सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण युद्ध 'बड़ा घल्लूघारा' था। हुआ यूं कि सन् १७६१ ई. के आक्रमण के बाद अब्दाली अभी अफगानिस्तान लौटा ही था कि सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

ने लाहौर पर हमला करके कब्ज़ा कर लिया। अब्दाली द्वारा नियुक्त सूबेदार लाहौर छोड़कर भाग गया।

जनवरी १७६२ ई में जब अब्दाली को इसकी ख़बर मिली तो वह बौखला गया। सिक्खों की छापामार गतिविधियों से वह पहले ही झल्लाया हुआ था। इस बार उसने सिक्खों पर बड़ा हमला करने की ठानी। सिक्खों को अब्दाली की योजना की भनक लग गई। उन्होंने अपने परिवार मलेरकोटला के पास एकत्र कर दिए ताकि परिवारों को सुरक्षित करके वे लाहौर वापस जाकर अब्दाली का मुकाबला कर सकें। अंदाज़ के उलट दस दिन के बजाय अब्दाली तीन दिन में ही लाहौर पहुंच गया। उसके सिपहसालार कासिम ख़ान ने मलेरकोटला पहुंचकर सिक्खों और उनके परिवारों को घेरे में ले लिया और कत्लेआम शुरू कर दिया।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया तथा अन्य सिक्ख जत्थेदारों के नेतृत्व में सिक्खों ने घमासान युद्ध किया। वे अपने परिवारों को बचाकर बरनाला की ओर ले जाने का प्रयत्न करने लगे। सिक्ख बरनाला तो पहुंच गये परंतु इस युद्ध में लगभग ३०,००० सिक्ख स्त्री, पुरुष, बच्चे, वृद्ध शहीद हुए। लगभग आधे सिक्ख एक ही दिन में ख़त्म हो गए। इसी लिए इस दिन को 'बड़ा घल्लूघारा' कहा जाता है।

सरदार जस्सा सिंघ को इस युद्ध में २२ जख़्म लगे। इतनी विकट परिस्थितियों में भी आपने हिम्मत नहीं हारी। स्वयं भी स्वस्थ हुए और छिन्न-भिन्न हो चुके सिक्खों को भी पुन: संगठित करने में विशेष भूमिका निभाई। सरदार जस्सा सिंघ के प्रयासों के फलस्वरूप सिक्ख कुछ ही समय में फिर अब्दाली का मुकाबला करने में समर्थ हो गए।

कपूरथला में राजधानी की स्थापना : सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने कपूरथला, सरलपुर, फतेहाबाद, सुलतानपुर, ईसड़ू, सफीदों, जंडियाला, नूरमहिल, कोट शिताब, मसामी, बेगोपुर, सराय नूरुद्दीन, गोइंदवाल, सरहाली, वैरोवाल आदि क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की और कपूरथला को अपनी राजधानी बनाया।

सरदार जस्सा सिंघ ने अपना एक सिक्का भी चलाया, जिस पर दर्ज था :

सिक्कह ज़द दर जहां बफ़जले अकाल।
मुलक-ए-अहिमद गरिफ़त जस्सा कलाल।

सुलतान-उल-कौम : महान् सिक्ख जरनैल सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया सन् १७८३ ई में ६५ वर्ष की आयु में श्री अमृतसर में अकाल चलाना कर गए। आपका स्मारक गुरुद्वारा साहिब बाबा अटल राय के पास स्थित है। सरदार भाग सिंघ आपके उत्तराधिकारी बने। सरदार भाग सिंघ के सुपुत्र सरदार फ़तहि सिंघ ने सन् १८०१ ई में कपूरथला रियासत की स्थापना की।

सिक्ख पंथ के अद्वितीय नेतृत्व और अनुपम सेवा-भाव के कारण सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को 'सुलतान-उल-कौम' की उपाधि प्राप्त है।



चीफ खालसा दीवान : संक्षिप्त परिचय

*-स. बिकरमजीत सिंघ**

१८४९ ई के बाद अंग्रेजों ने पंजाब पर कब्ज़ा कर लिया। अंग्रेजों ने जहां पंजाब पर कब्ज़ा किया वहां साथ ही यहां की संस्कृति और धर्म को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया। पंजाब में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए अंग्रेज़ हकूमत ने पादरियों की सहायता से अपने मिशन स्कूल खोलने शुरू कर दिए। इन स्कूलों को खोलने का मंतव्य यह था कि पंजाब को पूरी तरह से ईसाईयत के रंग में रंग दिया जाए।

"सरकार की इच्छा थी कि वह देश में पढ़े-लिखे लोगों का एक ऐसा वर्ग तैयार करे जो पहरावे से भारतीय हो परंतु उसकी सोच पश्चिमी हो। वो सरकार के शासन में सहायता कर सके और सरकार-पक्षीय नीतियों को लोगों तक पहुंचा सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सरकार ने सरकारी स्कूल १८६३ ई में श्री अमृतसर में खोला। बाद में हर ज़िले में एक या एक से बढ़कर स्कूल खोल दिये गये।"[१]

प्रो. करतार सिंघ एम. ए. के अनुसार, "अंग्रेजों का यह दसतूर था कि जिस देश में भी वे बादशाही का झंडा गाढ़ते थे, वहां शीघ्र ही ईसाई धर्म के प्रचार केंद्र भी कायम कर देते थे। उनका निश्चय था कि हमारी बादशाही में नए शामिल हुए देश के लोग यदि हमारे धर्म में आ मिलेंगे तो हमारा राज्य पक्का हो जाएगा और गदरों, बगावतों की गुंज़ाइश नहीं रहेगी।. . . इस लिए पंजाब पर कब्ज़ा करते समय उन्होंने पंजाब के केंद्रीय स्थानों पर खासकर माझा क्षेत्र के सिक्खों और सरहद के पठानों के इलाकों में ईसाई धर्म के प्रचार के केंद्र अथवा मिशन कायम करने आरंभ कर दिए।"[२]

अंग्रेज सरकार की इस नीति का प्रभाव धीरे-धीरे पंजाब पर पड़ता साफ दिखने लगा। पंजाब में बस रहे हिंदू और सिक्ख धर्म के लोगों ने ईसाई धर्म की नीतियों से प्रभावित और प्रेरित होना शुरू कर दिया। इसका परिणाम यह निकला कि सन् १८७३ ई में मिशन स्कूल श्री अमृतसर के चार विद्यार्थियों-- अतर सिंघ, आइआ सिंघ, संतोख सिंघ, साधू सिंघ ईसाई धर्म ग्रहण करने के लिए तैयार हो गए। यह ख़बर चारों तरफ विशेषत: सिक्ख समाज में जंगल की आग की तरह फैल गई। सिक्ख कौम के लिए यह बात एक चुनौती बन गई। जब इस बात का पता कुछ पंथ-दर्दी सिक्ख अगुओं को लगा तो उन्होंने चारों सिक्ख विद्यार्थियों को बड़ी मुश्किल से समझा-बुझाकर ईसाई बनने से रोका।

उधर दूसरी तरफ सनातनी धर्म के पैरोकार भी पंजाब के अंदर बढ़ रहे ईसाईयत के प्रचार से चिंतित थे, जिस कारण सनातनी धर्म के पैरोकारों ने ईसाई धर्म के प्रचार पर अंकुश लगाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज की गतिविधियों में सिक्खों ने भी अपनी शमूलियत की और ईसाई धर्म के बढ़ते हुए प्रचार को रोकने हेतु आर्य समाजियों का साथ दिया किंतु आर्य समाजियों की तरफ से सिक्ख गुरु साहिबान के प्रति अपमानजनक शब्दावली इस्तेमाल किए जाने की वजह से सिक्ख समुदाय के लोग आर्य समाज से अलग हो गए। इस घटना के बारे में प्रो. करतार सिंघ एम. ए. लिखते हैं कि "एक पंडित ने गुरु का बाग श्री अमृतसर में कथा करते हुए एक दिन गुरु साहिबान की शान के विरुद्ध कुछ अभद्र शब्द

**२९४६/७, बाजार लौहारां, चौक लछमणसर, श्री अमृतसर-१४३००६; मो. +९१८७२७८००३७२*

कहे और खालसा पंथ की कड़ी नुक्ताचीनी की। इस पर सिक्खों के दिल दुखी होकर भड़क उठे।"[३]

दरपेश चुनौतियों के इस दौर में सिक्खों ने अपनी एक अलग सभा बनाने का विचार किया जिसके तहत सिक्ख धर्म को ईसाई धर्म के प्रचार से बचाने के लिए और सिक्ख धर्म के प्रचार एवं प्रसार हेतु सन् १८७३ ई में श्री अमृतसर में स. ठाकुर सिंघ संधावालिया की अध्यक्षता में नुमाइंदा सिक्खों की एकत्रता हुई और सिक्खों की अपनी एक नई जत्थेबंदी "श्री गुरु सिंघ सभा" अस्तित्व में आई। इस जत्थेबंदी का अध्यक्ष स. ठाकुर सिंघ संधावालिया को चुना गया।

इस सभा ने सिक्ख धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए तुरंत कार्य करने आरंभ कर दिए। सिक्ख विरासत को लोगों तक पहुंचाने के लिए पंजाबी भाषा एवं गुरमुखी लिपि के जरिए, समाचार पत्र, मैगज़ीन और पुस्तकें छापना आरंभ किया, जिसके तहत भाई गुरमुख सिंघ के प्रत्यनों सदका सन् १८८० ई में "गुरमुखी अख़बार" शुरू किया गया। इस समाचार पत्र का मंतव्य सिक्ख धर्म और 'सिंघ सभा' के कार्यक्रमों का प्रचार करना था। इसी तरह सन् १८८० ई में ही "विदिअक पंजाब", सन् १८८५ में "खालसा अख़बार", सन् १८८६ में "रसाला सुधारक" और "खालसा गज़ट" पत्र जारी किए गए।

प्रो. करतार सिंघ एम. ए. के अनुसार, "सन् १८८२ में महाराजा हीरा सिंघ नाभा ने सिंघ सभा की सहायता हेतु सात हज़ार रुपए दिए। इस रकम से सन् १८८३ में "खालसा प्रेस" जारी किया गया ताकि पंजाबी के समाचार पत्रों आदि की छपाई आसान और अच्छी तरह से हो सके।"[४]

श्री अमृतसर के अतिरिक्त कई और शहरों में भी सिंघ सभा की शाखाओं की स्थापना की गई। श्री अमृतसर की सिंघ सभा के समानांतर सन् १८७९ में लाहौर में भी एक "सिंघ सभा" की स्थापना हुई। यह सिंघ सभा श्री अमृतसर की सिंघ सभा की विचारधारा से थोड़ी अलग थी। चूंकि इस सिंघ सभा के नुमाइंदा सिक्ख गर्म सोच और नए विचारों के धारणी थे। सिंघ सभा श्री अमृतसर की तरह सिंघ सभा लाहौर की भी कई शाखाएं बनीं।

सिंघ सभा और इसकी शाखाओं की स्थापना वास्तव में धर्म और शिक्षा के क्षेत्र में सिक्ख कौम को गुरमति विचारों में परिपक्व करवाने के लिए हुई थी। सिंघ सभा लहर ने सिक्ख धर्म में पुनर्जागृति लाने के लिए कई कार्य किए। इन कार्यों में शिक्षा, खासकर स्त्री-शिक्षा का प्रचार, सिक्ख धर्म और इतिहास के क्षेत्र में कार्य, सिक्ख परंपराओं की पुनर्स्थापना करने और गुरमुखी लिपि में पंजाबी भाषा के प्रचार का विशेष स्थान था। इसके तहत सन् १८९२ ई में श्री अमृतसर में विश्व प्रसिद्ध खालसा कॉलेज का शिलान्यास किया गया। इसके लिए श्री अमृतसर और लाहौर की सिंघ सभाओं ने मिलकर कार्य किया। इसके अतिरिक्त भाई गुरमुख सिंघ और ज्ञानी दित्त सिंघ ने खालसा कॉलेज की स्थापना के लिए विशेष रूप से प्रयत्न किए।

कुछ समय बाद ये सिंघ सभाएं दीवानों के रूप में बदल दी गईं। एक खालसा दीवान श्री अमृतसर और दूसरी खालसा दीवान लाहौर के नाम से जानी जाने लगी। इन दीवानों के प्रमुख अगुओं में से स. अतर सिंघ रईस भदौड़ जून, १८९६ ई में अकाल चलाना कर गए। इसके उपरांत नवंबर, १८९८ ई में भाई गुरमुख सिंघ तथा सितंबर, १९०१ ई में ज्ञानी दित्त सिंघ के देहांत के कारण इन दीवानों का भारी नुकसान हुआ।

खालसा दीवानों के इस हालात के उपरांत दीवानों की अगली कार्यवाही प्रतिष्ठित सिक्ख अगुओं स. सुंदर सिंघ मजीठिया और भाई अरजन सिंघ बागड़ीआं के हाथ आई। इसके बारे में डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) लिखते हैं कि

"उस वक्त स्थिति को देखते हुए सूझवान सिक्खों ने दोनों दीवानों को मिलाकर एक समूची संस्था बनाने की सोची। इस सम्बंध में सन् १९०१ ई की वैसाखी के मौके पर श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर के परिसर में स्थित मलवई बुंगे में बहुत भारी एकत्रता हुई और एक सर्वसांझी संस्था बनाने का फैसला किया गया।"[५]

इन मुख्य अगुओं ने इकट्ठे होकर एक सर्वसांझी और नियत कानून के मुताबिक काम करने वाली संस्था का अलग संविधान तैयार किया। इस तैयार किए गए संविधान के मसौदे को २१ सितंबर, १९०२ में प्रवान कर लिया गया और एक नयी संस्था "चीफ खालसा दीवान" अस्तित्व में आई। इस संस्था का प्रथम अधिवेशन ३० अक्तूबर, १९०२ ई को मलवई बुंगे में हुआ।

चीफ खालसा दीवान का प्रथम अध्यक्ष स. अरजन सिंघ बागड़ीआं और सचिव स. सुंदर सिंघ मजीठिया को चुना गया। डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) के अनुसार, "उस समय २९ सिंघ सभाएं इस नए बने दीवान के साथ जुड़ीं और एक साल में ही इनकी संख्या ५३ तक पहुंच गई।"[६]

यह दीवान चूंकि गुरमति और सिक्खी के प्रचार एवं प्रसार के लिए अस्तित्व में आया था इसलिए इसके कानून के मुताबिक वही व्यक्ति इसका सदस्य बन सकता था जो अमृतधारी हो और गुरमति का धारक होता हुआ दीवान के कार्यों के लिए आर्थिक सहायता के तौर पर अपनी किरत-कमाई में से दीवान के लिए दसवंध-भेटा दे।

चीफ खालसा दीवान ९ जुलाई, १९०४ को १८६० के एक्ट की धारा २१ के अधीन रजिस्टर्ड हुई। आधुनिक समय में चीफ खालसा दीवान का मुख्यालय शेरशाह सूरी मार्ग (जी. टी. रोड) श्री अमृतसर पर स्थित है जो कि सबसे पहले स. सुंदर सिंघ मजीठिया की रिहायश में स्थापित किया गया था।

चीफ खालसा दीवान नियमित रूप से संविधान के मुताबिक काम करने लगा। इस दीवान का भी वही था जो उद्देश्य 'सिंघ सभा' का था।

सिक्ख कौम की बेहतर ढंग के साथ अगुआई करते हुए चीफ खालसा दीवान ने सिक्ख सभ्याचार को हर पक्ष से पुनर्जीवित करने के लिए कई कार्य आरंभ कर दिए।

"इस संस्था के मनोरथ में खालसा पंथ की आध्यात्मिक, मानसिक, सभ्याचारक, सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक उन्नति एवं बढ़ोतरी के लिए संघर्ष करना, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं का प्रचार करना, गुरबाणी, सिक्ख इतिहास और सिक्ख मर्यादा का प्रसार करना, सिक्ख गुरु साहिबान में विश्वास रखने वालों की रक्षा करना और जात-पात, रंग एवं कौमों के भेदभाव से ऊपर उठकर मानव-जाति की सेवा इत्यादि शामिल है।"[७]

चीफ खालसा दीवान की तरफ से जहां सिक्खों को गुरमति के साथ जोड़ने के लिए प्रयास प्रारंभ किए गए वहीं बहुत-सी सामाजिक, लोक-भलाई की संस्थाएं भी खोली गईं। दीवान की तरफ से सामाजिक-भलाई के इन कार्यों को चलाने उनके प्रबंध और देख-रेख के लिए सब-कमेटियां बनाई गईं। इन सब-कमेटियों का कार्य के अधार पर वर्ग विभाजन किया गया। इन सब कमेटियों का उद्देश्य कौम को सर्वपक्षीय विकास के मार्ग पर चलाना था। इन सब कमेटियों के नाम इस प्रकार हैं :

पंजाबी प्रचार सब-कमेटी, दुआबा सिंघ सागर सब-कमेटी, माझा प्रचार सब-कमेटी, धार्मिक सब-कमेटी, इतिहास खोज सब-कमेटी, खालसा अनाथालय सब-कमेटी, गुरु स्थान सेवक सब-कमेटी, गुरबाणी शुद्ध लेखन सब-कमेटी, सिक्ख बलोचिस्तान प्रचार कमेटी, विद्धियक प्रचार सब-कमेटी, मासिक पत्र सब-कमेटी, जीवन सेवक सब-कमेटी, खालसा उपदेशक कॉलेज घरजाख सब-कमेटी, सिक्ख संसकार

विधि सब-कमेटी, जात-पात निवारण सब-कमेटी, ज़राइमपेशा कबीले सुधार सब-कमेटी।"[८]

चीफ खालसा दीवान ने शिक्षा के क्षेत्र में सिक्ख समाज को आगे लाने के लिए कई तरह के कार्य शुरू किये, जिनमें सन् १९०८ ई में शुरू की गई "सिक्ख एजूकेशनल कान्फ्रेंस" की स्थापना शामिल है।

पंजाबी के प्रसिद्ध आधुनिक साहित्यकार भाई साहिब भाई वीर सिंघ ने भी चीफ खालसा दीवान को बुलंदियों पर पहुंचाने के लिए कई विशेष साहित्यक कार्य किए। चीफ खालसा दीवान ने कई ऐसे कार्य भी किये जिनका सिक्ख समाज को तो लाभ हुआ ही परंतु गैर-सिक्खों को भी इन कार्यों का फायदा हुआ। ये कार्य संस्थागत रूप में आज भी मानव-जाति की भलाई करते हुए उदाहरण बने हुए हैं।

चीफ खालसा दीवान की तरफ से समय-समय पर स्थापित की गई संस्थाओं का विवरण इस प्रकार है :

१. सेंट्रल खालसा यतीमखाना, श्री अमृतसर (१९०४)
२. खालसा प्रचार विद्यालय, तरनतारन (१९०८)
३. खालसा दस्तकारी स्कूल (लड़कियां) श्री अमृतसर (१९१३)
४. सूरमा सिंघ आशरम (अंध आश्रम), श्री अमृतसर (१९३५)
५. होमियोपैथिक अस्पताल, श्री अमृतसर (१९४२)
६. खालसा अस्पताल, तरनतारन
७. पंजाब एंड सिंध बैंक इत्यादि।

चीफ खालसा दीवान ने जहां "सिक्ख एजूकेशनल कान्फ्रेंस" की शुरूआत की वहीं कौम के उज्ज्वल भविष्य और कौम की आने वाली पीढ़ी को सिक्ख सोच के धारणी बनाने के संकल्प के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर बौद्धिक विकास के पक्ष से उच्च गुणवत्ता वाले शहरी बनाने के लिए प्रयत्न भी किए। इसके तहत दीवान की तरफ से पब्लिक स्कूलों की स्थापना की गई। सन् १९६७ ई में पहला पब्लिक स्कूल श्री अमृतसर में स्थापित किया गया। इन पब्लिक स्कूलों का नाम सिक्ख धर्म के आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के नाम पर श्री गुरु हरिक्रिशन पब्लिक स्कूल रखा गया। वर्तमान में दीवान की सरप्रस्ती में लगभग ४४ स्कूल पंजाब और पंजाब से बाहर चल रहे हैं। कुछ समय पहले ही श्री अमृतसर में चीफ खालसा दीवान के मुख्यालय के पास मैनेजमेंट संस्थान भी स्थापित कर दिया गया है।

चीफ खालसा दीवान ने जहां सिंघ सभा लहर के मनोरथों की पूर्ति करते हुए सिक्ख कौम को अलग-अलग ढंगों से गुरमति की तरफ प्रेरित किया वहीं सिक्ख पुनर्जागृति में भी बेशुमार योगदान डाला। सामाजिक भलाई के साथ-साथ बेसहारा, अनाथ बच्चों की स्थिति को सुधारने में भी चीफ खालसा दीवान की पंथ को एक बड़ी देन है।

पाद-टिप्पणियां :

१. स. भाग सिंघ अणखी, सोवीनर, ६१वीं सरब हिंद सिक्ख विद्धयक कानफरंस, सन् २००२
२. सिक्ख इतिहास, भाग : २, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर
३. उपरोक्त।
४. उपरोक्त।
५. सिक्ख पंथ विशव कोश; पृष्ठ ७४८
६. उपरोक्त।
७. स. रछपाल सिंघ, पंजाब कोश; भाषा विभाग पंजाब, पृष्ठ ८४१
*८. स. सतविंदर सिंघ, सेंट्रल खालसा यतीमखाना : सथापना ते योगदान, खोज निबंध (**G.N.D.U.**) एम. फिल, अप्रकाशित, २००७*



साका श्री पंजा साहिब का ऐतिहासिक विवरण

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

'साका' शब्द की व्युत्पति 'शक' शब्द से हुई है। किसी विशेष वर्ष का वर्णन करते समय 'शक संवत्' शब्दों का प्रयोग किया जाता है। सबसे पहले 'शक संवत्' का प्रचलन राजा सलवान ने शुरू किया। फिर इसके बाद बहुत-सी ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करते समय कई इतिहासकारों एवं विद्धानों ने वर्ष विशेष का वर्णन करने हेतु 'शक संवत्' शब्दों का प्रयोग करना शुरू कर दिया। यूं भी 'शक' अर्थात् 'साका' का अर्थ होता है, ऐसा अद्भुत काम या कारनामा, जो इतिहास में प्रसिद्ध हो आल्हा उत्तम कोटि की घटना। यह गौरव व सम्मान उन सिक्ख योद्धाओं व शहीदों को प्राप्त है जिन्होंने जुल्म, अन्याय तथा अत्याचार के विरुद्ध जूझते हुए अपनी ज़िंदगियां कुर्बान कर दीं। उन्होंने ऐसे शहीदी साकों की नींव रखी, जिन्होंने पूरे विश्व के इतिहास की धारा मोड़कर रख दी। ऐसे शहीदों के नाम भारत ही नहीं अपितु विश्व इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों में अंकित हैं। सिक्ख धर्म के इतिहास से संबंधित जब भी किसी साके का ज़िक्र होता है, तब हमारा शीश महान् सिक्ख योद्धाओं व शहीदों के आगे झुक जाता है। हृदय द्रवित हो उठता है। आंखों से अश्रुओं की धारा बह निकलती है। प्रत्येक साका की आगोश में हम सबकी मन की पीड़ा, टीस समायी हुई है। किसी भी साके का उल्लेख करते समय हृदय कांप उठता है। एक और विशेष बात, जिन वर्षों में भी हमारे तमाम साके हुए, उन सभी वर्षों को इस साकों ने विशेष बना दिया। ऐतिहासिक बना दिया। अब तो 'साका' शब्द गुरमति मार्ग पर चलने वालों के मन में पूरी तरह रच-बस गया है। यह विशुद्ध (निरोल) रूप से गुरमति विचारधारा व दर्शन से ही संबंधित हो चुका है।

साका श्री पंजा साहिब का जब ज़िक्र किया जाता है, तब प्रत्येक संवेदनशील मनुष्य की आंखें नम हो जाती हैं। जिगर चाक हो जाता है।

महाराजा रणजीत सिंघ के प्रसिद्ध सिक्ख सेनापति स. हरी सिंघ नलूआ ने श्री गुरु नानक देव जी की स्मृति में सुशोभित गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब की शानदार इमारत का निर्माण करवाया और इसके नाम बहुत-सी संपत्ति (जागीर) लगवाई परंतु खेद है कि महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्ख गुरुद्वारों की सेवा, देखभाल के लिए जिन प्रबंधकों, महंतों को नियुक्त किया था, वे उनके देहांत के बाद स्वयं को सेवादार न समझ, गुरुद्वारा साहिबान की संपत्ति, ज़मीन का खुद को मालिक समझने लगे। ज़मीनों की भारी आय ने उनको भोग-विलासी बना दिया और स्वार्थी भी।

पंजाब में अंग्रेजों ने अपना शासन स्थापित करने के बाद मुगल शासकों की भांति गुरुद्वारा साहिबान को सिक्खों की शक्ति का स्रोत मान इनके प्रबंध में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। प्रबंधक महंत वगैरह उनके पिट्ठू बन गए। उनके उकसाने पर महंतों ने मनमानी करते हुए सन् १९०६ ई में गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब की तमाम जागीर अपने नाम लगवा ली। अंग्रेज़ों के

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. +९१९८७२२-५४९९०*

पिट्ठू इन महंतों का लोभ-लालच बढ़ने लगा। वे गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन हेतु आने वाली सिक्ख संगत के साथ बुरा व्यवहार करने लगे। इनकी मनमानियां देख संगत का मन बहुत दुखी होता। समझाने की कोशिश करने वालों को महंत अपने गुंडों द्वारा पिटवाते। अपमानित करवाते। महंतों की मनमानियां रोकने हेतु तथा गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध पंथक हाथों में लेने हेतु सूझवान सिक्खों ने मन में ठान ली। उन्होंने अन्य सिक्खों को जागृत जरना शुरू कर दिया।

गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब के महंत के विरुद्ध भी शुरू हुआ विरोध कई सालों तक चलता रहा। ऐबटाबाद की संगत ने जब महंत मिट्ठा सिंघ से हिसाब मांगा, तब उसने कोई उचित उत्तर न दिया। संगत को पता चल गया कि उसने धोखे से गुरुद्वारा साहिब की सारी ज़मीन अपने नाम लगवा ली है। महंत मिट्ठा सिंघ की मौत के बाद १८ नवंबर, १९२० ई को भाई करतार सिंघ झब्बर की अगवानी में २५ सिंघों का एक जत्था गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब पहुंचा। कुछ तकरार के बाद महंत के वंशजों ने क्षमा मांगते हुए गुरुद्वारा साहिब का सारा प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सौंप दिया। भाई प्रताप सिंघ को गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब में सचिव, प्रबंधक एचं कोषाध्यक्ष नियुक्त कर सेवा-संभाल की जिम्मेवारी सौंप दी गई।

काफी संघर्ष के बाद श्री दरबार साहिब तरनतारन का प्रबंध भी भ्रष्ट महंतों से सिक्ख संगत ने अपने हाथों में ले लिया। इस संघर्ष में भाई हज़ारा सिंघ को शहादत देनी पड़ी। इस घटना का पता चलने पर सिक्ख दूर-दूर से इकट्ठा होने लगे। घुक्केवाली गांव व आसपास के सिंघ जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर के पास पहुंचे। उन्होंने ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग पर काबिज़ महंत सुंदर दास की अमर्यादित गतिविधियों के विषय में बताया। महंत को समझाने-बुझाने हेतु जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर की अगवानी में ५० सिंघों का जत्था गांव घुक्केवाली में पहुंचा। महंत ने क्षमा मांगी तथा भविष्य में गुरमर्यादा में रहकर प्रबंध चलाने का इकरारनामा लिखकर दे दिया। कुछ अरसा वह इकरारनामा का पाबंद रहा। परंतु फिर उसने अपना पुराना रास्ता पकड़ लिया।

८-९ अगस्त, १९२२ ई को कुछ सिंघ लंगर हेतु बाग में से जलावन की लकड़ी लेने के लिए गए। महंत ने पुलिस के साथ मिलकर इन सिंघों का चालान करवा दिया कि ये मेरी निजी संपत्ति में से लकड़ी काटने आ पहुंचे हैं। रोष स्वरूप गुरु के बाग का मोर्चा शुरू हो गया। प्रतिदिन १०० सिंघों का जत्था शांतिपूर्वक रोष-प्रदर्शन करता हुआ गुरु के बाग की ओर जाता तथा पुलिस उन्हें घोर यातनाएं देती। श्री अमृतसर पुलिस के डी. एस. पी. मिस्टर बी. टी. सिक्खों पर कुत्ते छोड़ देता और उनको लाठियों से पीटता हुआ घोड़ों के सुम्मों तले रौंदता। कई सिंघ गंभीर रूप से घायल हो जाते। इस मोर्चे में पैन्शन प्राप्त सेनिकों का जत्था भी रोष-प्रदर्शन हेतु पहुंचा। रियासत कपूरथला के गांव धालीवाल का सूबेदार अमर सिंघ इस जत्थे का मुखिया था। पलटन नं: १९ का हवलदार मास्टर चतर सिंघ उप जत्थेदार था। इस जत्थे के सिंघों के गले में हार व एक समान वर्दियां एवं दसतारें (पगड़ी) थीं। यह जत्था पूरी शानो-शौकत के साथ मार्च करता हुआ गुरु के बाग की ओर रवाना हुआ।

इन सेनिकों को हिरासत में ले श्री अमृतसर के मैजिस्ट्रेट नवाब असलम हयात ख़ान की अदालत में पेश किया गया। नवाब ने इनमें से २६ को ६-६ माह की बिना श्रम कैद तथा १००-१०० रुपए जुर्माना, अन्य ७४ सिंघों

को २८-२८ वर्ष की सश्रम कैद तथा सौ-सौ रुपए जुर्माना की सज़ा का हुक्म सुना दिया। २९ अक्तूबर, १९२२ ई को इन सेनिकों को श्री अमृतसर से रेलगाड़ी द्वारा अटक व कैमलपुर के बंदीगृहों में भेजा गया। जब यह रेलगाड़ी गुज्जरांवाला स्टेशन पर पहुंची तो वहां की संगत को पहले से ही किसी तरह गाड़ी के आने की सूचना मिल गई थी। स्टेशन पर भाई अमरीक सिंघ, डॉ. महा सिंघ, वकील नरैण सिंघ, मास्टर छहबर सिंघ आदि भारी संगत सहित सेनिक-जत्थे के स्वागत हेतु पहुंच गए। फल, मिठाई और अन्य वस्तुएं भेंट की गईं।

सेनिक सिंघों के जत्थे वाली यह रेलगाड़ी स्पैशल थी, जो प्रत्येक रेलवे स्टेशन पर नहीं रुकती थी। यह गाड़ी ३० अक्तूबर दोपहर को रावलपिंडी पहुंच गई। इससे आगे रास्ते में गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब स्थित है। गुज्जरांवाला से ही इसकी सूचना श्री पंजा साहिब में पहुंच चुकी थी। वहां पर संगत ने गाड़ी रोककर कैदी भाइयों की सेवा करने की योजना बनाई। योजनानुसार लंगर तैयार कर रेलवे स्टेशन पर लाया गया। इस अवसर पर ३०० के आसपास संगत रेलवे स्टेशन पर जमा हो चुकी थी। स्टेशन मास्टर द्वारा बताने पर पता चला कि सरकार की ओर से सख़्त हुक्म है कि यह गाड़ी यहां पर नहीं रुकेगी। सीधे अटक नामक स्थान पर जाएगी। यह पता चलते ही श्री पंजा साहिब की संगत को बेहद निराशा हुई। उस समय भाई प्रताप सिंघ तथा भाई करम सिंघ ने उपस्थित संगत से कहा, "गाड़ी अवश्य रुकेगी। हम अपने भाइयों को प्रशादा (लंगर) छकाकर ही आगे जाने देंगे।" उन दोनों ने तो अपनी जान देकर भाइयों की सेवा करने की प्रतिज्ञा कर ली थी। प्रतिज्ञा बड़ी कठिन थी। उन्होंने अकाल पुरख के चरणों में अरदास की कि वे उन्हें यह प्रतिज्ञा संपूर्ण करने का बल बख़्शें।

जी हां! रावलपिंडी से चली रेलगाड़ी श्री पंजा साहिब के निकट पहुंच चुकी थी। स्टेशन मास्टर ने लाइन क्लीयर का संकेत दिया हुआ था। गाड़ी रुकने की कतई भी आशा नहीं थी। फिर क्या था? भाई प्रताप सिंघ तथा भाई करम सिंघ दोनों रेलपटरी पर लेट गए। और भी काफी संगत रेलपटरियों के बीच बैठ गई। गाड़ी के चालक ने रेलवे लाइन पर लेटे हुए सिंघों को देख बहुत विसिल दिए परंतु किसी ने भी परवाह नहीं की। वे मौत से डरने वाले नहीं थे बल्कि मौत को डराने वाले थे। वे *"मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु"* की अवस्था को प्राप्त कर चुके थे।

रेलगाड़ी तेज गति से दौड़ती चली आ रही थी। रेलगाड़ी का इंजन दोनों सिंघों भाई प्रताप सिंघ व भाई करम सिंघ की हड्डियों को चूर-चूर करता हुआ रुक गया। अन्य कई सिंघ घायल हो गए। छः सिंघों की जान तो बच गई मगर उनकी टांगें व बाजुएं कट गईं। एक अद्वितीय साका घटित हो चुका था। रेलगाड़ी रुक गई रेलपटरियों के दोनों तरफ संगत इस ऐतिहासिक साका के दर्दनाक तथा रौंगटे खड़े कर देने वाले दृश्य को देख दंग रह गई। जब दोनों सिंघों को इंजन के पहियों के नीचे से निकालने की कोशिश की गई, तब भाई प्रताप सिंघ ने कहा, "पहले गाड़ी में सवार गुरसिक्खों को प्रशादा छका लीजिए। हमें बाद में निकालना। अगर हमें गाड़ी के नीचे से निकाल लिया तो ड्राईवर गाड़ी भगाकर ले जाएगा।" उनका हौसला और साहस तथा सेवापूर्ण उत्साह देखते ही बनता था।

पहले कैदी रेलयात्रियों को प्रशादा छकाया गया। उसके बाद लहू-लुहान भाई प्रताप सिंघ एवं भाई करम सिंघ को गाड़ी के नीचे से बाहर

निकाला गया। वे सिसकियां भर रहे थे। एक रूहानी नूर, आलौकिक तेज़ उनके चेहरों पर चमक रहा था। परम संतुष्टि से उनके हृदय अति प्रसन्न थे। प्रतिज्ञा पूरी होने पर उनका रोम-रोम वाहिगुरु का शुक्राना कर रहा था।

उस समय के उपायुक्त (डी. सी.) को इस हौलनाक साका की सूचना दी गई। वह घटनास्थल पर पहुंचा। संगत ने घायल हुए सिंघों को हसन अब्दाल के अस्पताल में भर्ती करवाया। भाई प्रताप सिंघ एवं भाई करम सिंघ को अति गंभीरावस्था में गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब में लाया गया। यहां वे अपने पांच भूतक तन त्यागकर आत्मिक तौर पर गुरु-चरणों में जा विराजमान हुए और सिक्ख धर्म के संघर्षपूर्ण व गौरवपूर्ण सुनहरी साकों के इतिहास के पन्नों में एक और साका का पन्ना जोड़ गए। उन दोनों अमर शहीदों का अति प्रेमपूर्वक तथा सम्मान सहित अंतिम संस्कार रावलपिंडी में कर दिया गया। देश-विभाजन से पूर्व गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब में इस साके की स्मृत्ति में वार्षिक समारोह आयोजित किया जाता था।

रेलवे विभाग के भ्रष्ट व निर्दयी हाकिमों ने रेलगाड़ी रोकने के दोष में चालक को नौकरी से निकाल दिया। पूर्ण जांच हेतु उच्च-न्यायालय के एक जज की नियुक्ति की गई। चालक ने जज के समक्ष अपना बयान दर्ज करवाते हुए कहा। "मुझे रेलगाड़ी किसी भी कीमत पर न रोकने का मौखिक आदेश दिया गया था। मैं उस आदेश का पूरी जिम्मेवारी से पालन करता आ रहा था। रेलगाड़ी पूरी गति से दौड़े चली जा रही थी। जब यह भाई प्रताप सिंघ से टकराई तो मुझे लगा कि जैसे किसी पहाड़ से टकरा गई हो। वैक्यूम से मेरा हाथ छूट गया और रेलगाड़ी रुक गई।"

मानव के अदम्य साहस, त्याग, सहन-शक्ति के बिना तथा वाहिगुरु की रज़ा के बिना कोई साका घटित हो नहीं सकता, कोई आलौकिक घटना घटित नहीं हो सकती, कोई अद्भुत काम नहीं हो सकता। 

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें। *-संपादक।*

मन, बुद्धि और चेतना

*-डॉ. नरेश**

मानव के पास तीन अदृश्य शक्तियां हैं-- मन, बुद्धि और चेतना। मन का धर्म है चंचलता, बुद्धि का धर्म है तर्क-वितर्क और चेतना का धर्म है विवेक। चेतना आत्मा की आवाज़ है, इसलिए वह शरीर के मोह से निर्लिप्त है। मन और बुद्धि शरीर के अंग हैं तथा इनको शरीर के साथ ही भस्मीभूत हो जाना है, इसलिए ये शरीर से परे न कुछ देख सकते हैं, न सोच सकते हैं।

मन हर समय कामना करता रहता है। इसका स्वभाव ही चंचलता है। यह हमें कभी भी स्थिर नहीं होने देता। हम नौकरी कर रहे हैं। कितनी ही बढ़िया नौकरी क्यों न हो, मन हमें संतुष्ट नहीं होने देता। अमुक को देखो, क्या ठाठ हैं उसके! काश! मैं उसके स्थान पर होता। हम व्यापार कर रहे हैं। मन हमें दूसरे व्यापारियों के प्रति ईर्ष्यालु बना देता है। हम खेती करते हैं। मन हमें किसी दूसरे किसान की अधिक ज़मीन या अधिक अच्छी फसल के प्रति डाह से भर देता है।

मन को नीचे की ओर देखना नहीं आता, सदा ऊपर की ओर देखता रहता है। यह कभी नहीं सोचता कि मैं उन लाखों-करोड़ों से बेहतर हूं, जिनको दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती। परमात्मा का शुक्र नहीं करता कि उसने अपंग पैदा नहीं किया, पढ़ने-लिखने का अवसर प्रदान किया, नौकरी दी, घर दिया, पत्नी दी, बच्चे दिए। उलटा कुलबुलाता रहता है कि मेरे पास अतिरिक्त धन होता तो मैं भी अमुक जैसा एयर-कंडीशनर खरीद लेता, अमुक जैसी कार ले लेता, यह ले लेता, वह ले लेता। उस अमुक के साथ ईर्ष्या के बंधन में बांध देता है मन। उन लाखों-करोड़ों के साथ करुणा का रिश्ता नहीं बनाने देता, जो जीवन को संताप की तरह भोग रहे हैं।

बुद्धि का काम है कि प्रस्तुत करना। हम कुछ भी कर लें, बुद्धि उसको सही ठहरा देगी। हमने रिश्वत ले ली। मन ने उचित-अनुचित का प्रश्न उत्पन्न किया। बुद्धि ने तुरंत समाधान प्रस्तुत कर दिया-- कौन नहीं लेता रिश्वत? अमुक के भ्रष्टाचार के बारे में कितनी बार अख़बारों में छप लिया! क्या बिगाड़ लिया किसी ने उसका? मैंने पैसे लिए हैं तो उसका काम भी करके दिया है। लोग तो पैसे भी डकार जाते हैं और काम भी नहीं करते। बुद्धि के लिए यह शरीर ही अंतिम सत्य है, इसलिए बुद्धि शरीर के प्रत्येक कर्म को उचित ठहराने के लिए तर्क गढ़ती रहती है।

चेतना आत्मा की आवाज़ है। आत्मा को शरीर के प्रति कोई मोह नहीं है। न जाने इसके जैसे कितने शरीर वह ओढ़ चुकी है और न जाने अभी इसके जैसे कितने शरीर और ओढ़ने हैं। इसलिए चेतना ही है, जो हमें आईना दिखा सकती है, हमारे उचित-अनुचित कर्मों को यथातथ्य हमारी आंखों के सामने ला सकती है। इतना ही नहीं चेतना हमारे द्वारा किए जाने वाले कर्म के किए जाने से पहले ही हमें बता

*१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९ (हरियाणा)

सकती है कि हम जो करने जा रहे हैं, वह सही है या गलत। यही कारण है कि हम चेतना की उपेक्षा करते हैं क्योंकि अपनी कमज़ोरी, अपना घटियापन, अपनी तुच्छता, को देखना हमसे सहन नहीं हो सकता :

निंदक नियरे राखिये आंगन कुटी छुवाई।
बिनु पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाई।

यह निंदक कोई और नहीं हमारी चेतना है, जो बिना साबुन के, बिना पानी के हमारे मन की मैल को धोकर हमारे स्वभाव को निर्मल बना सकती है।

चेतना की आवाज़ सुनने से मन और बुद्धि के बीच संतुलन स्थापित हो जाता है। इस संतुलन में से विवेक का उदय होता है, जो हमारी सोच को संतुलित करता है और हमारे कर्मों को शुद्धता प्रदान करता है। 

कविताएं

श्री गुरु अमरदास जी

धन्य हैं श्री गुरु अमरदास जी महान।
भाईचारे, समानता का, दिया दिव्य ज्ञान।
मानव-मानव एक हैं, न हो ऊंच-नीच का भेद।
सामूहिक लंगर-प्रथा का, दिया अमूल्य संदेश।
चाहे कोई गरीब-जन हो, चाहे हो शहंशाह।
मानवता की राह में, बन गए आप गवाह।
बड़े-बड़े बादशाह को, कर दिए आप मज़बूर।
मन में भरे अहंकार को, कर दिया चकनाचूर।
गुरु-दरस का लाभ मिले, जब मिट जाए अहंकार।
सतसंग-सद्‌भाव बिना, नहीं होगा बेड़ा पार।

-डॉ नरेश कुमार वर्मा, डॉ बघेल नगर, ला ब शास्त्री वार्ड पटपर नहर, भाटापारा, रायपुर (छ ग) मो ९८२७८७७८९५

मरती नदियां

नदियां एक-एक कर खत्म होने लगी हैं।
कूड़ा-करकट, ज़हरीले रासायन,
सीवरेज की निस्तारण-गाह
बनकर रह गयी हैं नदियां।
जिनके किनारे जन्मी थी
प्राचीन सभ्यतायें,
गूंजती थी ऋचायें
और धार्मिक उपदेश
उन्हीं किनारों पर
उगने लगे हैं बेतहाशा
कंकरीट के बेतरतीब जंगल।
धार्मिक रहनुमा भी
लोगों का जीवन संवारने के नाम पर
नदियों का जीवन लील रहे हैं
उनमें तरह तरह की
सामग्रियां डालकर।
सिकुड़ते पाटों के बीच
गंदे नालों में तबदील होतीं
अपनी दुर्दशा पर अश्रु बहा रही हैं नदियां।
पेड़-पौधे पशु-पक्षी, मानव
सभी की जीवनदायनी नदियां
आज अपने ही जीवन को
तरस रही हैं।
अब भी समय है
देशवासियो जागो
नदियों को
मरने से बचा लो
नदियां ही न रहीं
तो सच मानिए
सस्कृति भी न रहेगी
और न ही सभ्यता।
हम सब भी न होंगे।

-डॉ प्रदीप शर्मा 'स्नेही', प्राचार्य, एस ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर, हरियाणा।

बच्चों के लिए अच्छे संस्कार

*-स. राजविंदर सिंघ 'जोगा'**

हमारे जीवन में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। किसी व्यक्ति से मिलकर, उससे बातचीत करके हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि फलां व्यक्ति अच्छे संस्कारों वाला है या फिर कहते हैं कि इस व्यक्ति के संस्कार अच्छे नहीं हैं। वास्तव में दोनों के लिए श्रेय जाता है उसके माता-पिता को। मां-बाप सोचते हैं कि हमने अपने बच्चों को पढ़ा-लिखा दिया, बस, उनकी ज़िम्मेदारी पूरी हो गई, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात है बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा करना जो उनकी ज़िंदगी का महत्त्वपूर्ण हिसा होते हैं।

बच्चों का मस्तिष्क (मन) एक कोरी सलेट के समान होता है। उस पर जो भी अंकित कर दिया जाता है वह आजीवन अमिट होता है। अच्छे संस्कार सबसे पहले मां-बाप या घर-परिवार से मिलते हैं। बच्चे की सबसे पहली अध्यापक अथवा गुरु मां होती है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरबाणी में कहा है :

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥
गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ *(पन्ना २५०)*

कहते हैं कि जब बच्चा मां के गर्भ में होता है तभी उसके संस्कार बनने लग जाते हैं। मां जैसा देखती है, खाती है, सुनती है अर्थात् जैसे वातावरण में रहती है वह असर गर्भ में पल रहे बच्चे पर पड़ने लगता है। जन्म के बाद जहां वह अधिक समय गुज़ारता है, एक-एक चीज़ बड़े ध्यान से देखता है, उससे सीखता है। यही समय होता है जब बच्चों में अच्छे संस्कार भरे जा सकते हैं। उन्हें यह सिखाना कि घर में बड़ों से किस तरह अच्छा व्यवहार करें, इसके लिए सबसे जरूरी है कि माता-पिता का अपना आचरण भी अच्छा हो। अपने से छोटों के प्रति भी हमारा व्यवहार प्यार भरा होना चाहिए। ऐसे वातावरण में पलकर बच्चों में भी अच्छे संस्कारों का विकास होता है। बहुत-सी अच्छी बातें देख-सुनकर भी वह सीख जाता है।

घर में अच्छी-अच्छी ज्ञानवर्धक पुस्तकें रखें। उसे खुद पढ़ें और बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें! दुख की बात यह है कि न आजकल मां-बाप के पास अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिए समय है और न ही उनके पास समय है कि वे अपने बच्चों के पास बैठकर उनसे अच्छी बातें करें और उन्हें अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाएं। इनकी जगह टेलीविज़न ने ले ली है। एक घर में एक से अधिक टेलीविज़न हैं। सब अपने-अपने कमरे में बैठकर टेलीविज़न के साथ नाता बनाए रखते हैं। टेलीविज़न में कई कार्टून कार्यक्रम भी ऐसे-ऐसे आते हैं जो उनको नैतिक संस्कारों से दूर तो ले जाते ही हैं, उनका मानसिक संतुलन भी बिगाड़कर रख देते हैं।

ऐसा काम, ऐसी बात बच्चों के सामने न करें जिससे शर्मिंदा होना पड़े। मां-बाप का फर्ज़ बनता है कि वे अपने बच्चों के लिए कुछ समय निकालकर उन्हें गुरुद्वारा साहिब में लेकर जाएं। वहां बहुत सारे अच्छे-अच्छे संस्कारों को बच्चे

**ए-१, श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन केंद्र, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर-१४३००१*

सीखते हैं। सभी मां-बाप सोचते हैं कि उनका बच्चा सच बोले और अच्छे संस्कारों वाला बने। वे अपने घर में बच्चों को ऐसा सिखाने की कोशिश करते हैं, लेकिन खुद प्राय: ऐसा नहीं करते।

जहां माता-पिता का अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने में योगदान है वहीं गुरुद्वारा साहिब की भी विशेष महत्ता है। गुरुद्वारा साहिब में जाकर बच्चे सही जीवन-जाच सीखते हैं और उनके मन में समाज के प्रति सेवा-भावना पैदा होती है। गुरुद्वारा साहिब में पंखा फेरना, झाड़ू देना, बर्तन साफ करना आदि कामों के धार्मिक एवं सामाजिक महत्त्व का ज्ञान प्राप्त होता है। हमें भाई गुरदास जी की बात पर ध्यान देना चाहिए। वे कहते हैं :

गुरसिख भलके उठ करि अंम्रित वेले सरु न्हावंदा।
गुरु कै बचन उचारि कै धरमसाल दी सुरति करंदा।
साधसंगति विचि जाइ कै गुरबाणी दी प्रीति सुणंदा।
संका मनहुं मिटाइ कै गुरु सिखां दी सेव करंदा।
किरत विरत करि धरमु दी लै परसाद आणि वरतंदा।
गुरसिखां नो देइ करि पिछों बचिआ आपु खवंदा।
कली काल परगास करि गुरु चेला चेला संदा।
गुरमुख गाडी राहु चलंदा ॥ (वार ११:४०)

गुरु साहिबान ने गुरसिक्ख के लिए एक आदर्श राह बताया है, जिस पर चलकर न केवल बड़ी से बड़ी मंज़िल पर पहुंचा जा सकता है, बल्कि प्रभु के साथ अभेद भी हुआ जा सकता हैं। गुरु का सिक्ख प्रतिदिन प्रात: काल (अमृत वेले) उठकर स्नान करता है। नित्तनेम की बाणी पढ़ता, सतसंगत करता है। साधसंगत में जाकर गुरु-विचार को प्रेम सहित सुनता है, सेवा करता है। कहने का भाव है कि गुरुद्वारा साहिब में जाकर बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं और उनका मानसिक विकास भी अच्छी तरह से होता है। जब हम कोई अच्छा काम करते हैं तो हमें सकून मिलता है, खुशी मिलती है। इस तरह हमें अपने बच्चों को अपने साथ लेकर गुरुद्वारा साहिब जाना चाहिए ताकि वे अच्छे संस्कारों वाले हों। इसमें मां-बाप को भी खुशी मिलेगी और समाज के लिए भी अच्छा होगा; माता-पिता, समाज और देश का नाम ऊंचा होगा। 

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

गुरबाणी चिंतनधारा : ८४

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

अठारहवीं असटपदी
सलोकु ॥ सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥
(पन्ना २८६)

१८वीं असटपदी के सलोक में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी सतिगुरु की महिमा का बखान करते हुए जीव को पूर्ण गुरु की संगत में रहकर अकाल पुरख का गुणगान करने को प्रेरित कर रहे हैं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिस जीव ने सति पुरखु अर्थात् परिपूर्ण परमेश्वर को जान लिया है, उसी को सच्चा गुरु समझो। ऐसे सच्चे गुरु की संगत ही जीव का उद्धार करने वाली है। ऐसे गुरु द्वारा बताई युक्ति से ही मनुष्य अपनी सुरति प्रभु-चरणों में जोड़ सकता है। गुरु पंचम पातशाह पावन संदेश देते हैं कि हे जीव! तू भी सतिगुरु की संगत में रहकर पारब्रह्म परमेश्वर के गुणों का गायन कर।

उपरोक्त सलोक में पंचम पातशाह ने ढोंगी गुरु एवं पूर्ण गुरु का भेद समझाते हुए कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन किया है कि केवल ढोंगी गुरुओं से किसी का उद्धार होने वाला नहीं है। गुरबाणी में स्पष्ट शब्दों में समझाया गया है कि जिसका मार्गदर्शक ही अपने मार्ग से भटका हुआ होगा वह अपने शिष्यों का क्या मार्गदर्शन करेगा? गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेनि ॥ (पन्ना ९५१)
गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥ (पन्ना ५८)

अर्थात् जिसका गुरु ही अंधा है उसके चेलों का भी कहीं ठौर-ठिकाना नहीं। बिना सतिगुरु के नाम-धन की प्राप्ति नहीं हो सकती और नाम-सिमरन से रहित जीवन का कोई उद्देश्य नज़र नहीं आता।

दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समय की नज़ाकत को समझते हुए देहधारी गुरु परंपरा को समाप्त कर सिक्ख पंथ को शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मानने हेतु आदेशित किया। ज्ञानी गिआन सिंघ के शब्दों में गुरु जी का उपदेश है :

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ।
गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभु को मिलबो चहे खोज सबद मैं लेह।
(पंथ प्रकाश)

सच्चे गुरु शबद-गुरु को प्रकट गुरु-रूप मानकर श्री गुरु नानक देव जी ने सिद्धों के प्रश्न का सहज जवाब देते हुए स्पष्ट किया कि शबद ही मेरा गुरु है तथा उसमें सुरति जोड़ने वाला मैं (नानक) उसका चेला (शिष्य) हूं :
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (पन्ना ९४३)

इसी भाव के दर्शन चौथे पातशाह श्री गुरु

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: +९१९९२९७-६२५२३

रामदास जी की बाणी में होते हैं :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरू बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ *(पन्ना ९८२)*

पूर्ण गुरु की कृपा-दृष्टि से ही हरि के गुण गायन किये जा सकते हैं और हरि के गुण गायन से ही भवसागर से पार-उतारा संभव है। गुरु और पारब्रह्म अभेद है।

असटपदी ॥
सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥
सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥
सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
गुर का सिखु वडभागी हे ॥
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥

१८वीं असटपदी की पहली पउड़ी में भी सच्चे गुरु की महिमा का बखान किया गया है कि गुरु अपने सिक्ख का प्रतिपालक है, दुर्मति दूर कर सुमति बख़्शने वाला है, विकारों के समस्त बंधन काटकर लोक-परलोक संवारने वाला है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि सतिगुरु शिष्य की प्रतिपालना करता है। सतिगुरु अपने शिष्य पर सदा मेहरबान रहता है। सतिगुरु अपने सेवक की दुर्मति अर्थात् मन की मैल को दूर कर देता है। गुरु का सिक्ख अपने सतिगुरु के पावन उपदेशों के द्वारा प्रभु-नाम का सिमरन करता है। सतिगुरु अपने सिक्ख के मायिक बंधन काट देता है। (माया के बंधनों से मुक्त होकर) गुरु का सिक्ख विकारों से बच जाता है अर्थात् विकारों की ओर उसका ख़्याल ही नहीं जाता। सतिगुरु सिक्ख को (सर्वोत्तम धन) नाम-धन दे देता है जिसकी बदौलत गुरु का सिक्ख भाग्यशाली बन जाता है। सतिगुरु अपने सिक्ख का लोक-परलोक संवार देता है। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि सतिगुरु अपने सिक्ख को दिलो-जान से प्यार करता है और उसकी सार-संभाल करता है। उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने सतिगुरु के शिष्य पर किए उपकारों का बड़े सुंदर ढंग से वर्णन किया है कि सतिगुरु अपने सेवक पर निरंतर कृपा-दृष्टि बनाये रखता है तथा उसकी खोटी बुद्धि को दूर कर उसे सुमति बख़्शता है। सतिगुरु सिक्ख को सही जीवन-मार्ग दर्शाता है। उसे माया के बंधनों से मुक्त करके माया में रहते हुए भी प्रभु-नाम की ओर लगा देता है। वह शिष्य को पांच विकारों-- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बचाकर स्वार्थ से परमार्थ की ओर अग्रसर कर देता है। यही नहीं उसके आवागमन के बंधन भी काट देता है। वह शिष्य को नाम रूपी अनमोल ख़जाना बख़्श देता है। उसे हर पल अपनी निगरानी में रखता है। उसे नाम का कवच बख़्शकर हमेशा के लिए समस्त बंधनों से मुक्त कर उसका लोक-परलोक संवार देता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥
अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥
तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥
(पन्ना १६८)

जैसे माता पुत्र को जन्म देकर अपनी नज़र के सामने रख उसका पालन-पोषण करती है, उसे हर दम प्यार-दुलार करती है,

उसके मुख में खाना देती है, उसी प्रकार गुरु सिक्ख को अपना प्यार देकर उसकी प्रतिपालना करता है। जिसका लालन-पालन करने वाला समर्थ गुरु हो उस सेवक को किसी बात की कमी नहीं हो सकती।

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥
आपस कउ करि कछु न जनावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥
मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥
तिसु सेवक के कारज रासि ॥
सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥
अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥

१८वीं असटपदी की दूसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने सच्चे सेवक को परिभाषित किया है, उसके शुभ लक्षण बताते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि ऐसे सेवक प्रभु-कृपा से गुरु की शिक्षा को पूर्णतया जीवन में धारण कर लेते हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि जो सेवक गुरु की शिक्षा ग्रहण करने हेतु गुरु के दर पर रहता है, गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करता है अर्थात् हृदय से मानता है ('सहै' शब्द से अभिप्राय है कि गुरु की शिक्षा अथवा आदेश चाहे कितना भी मुश्किल क्यों न हो उसे धैर्यपूर्वक सहनशीलता से हृदय से मानना और उसे मानना ही अपना परम कर्त्तव्य समझना) ऐसा सेवक स्वयं का बढ़प्पन जाहिर नहीं करता अर्थात् स्वयं के गुणों की तारीफ नहीं करता वह परिपूर्ण परमेश्वर का नाम हृदय में स्मरण करता रहता है अर्थात् हमेशा प्रभु को याद करता है। जो सेवक अपना हृदय प्रभु-चरणों में समर्पित कर देता है अर्थात् अपनी मनमर्ज़ी को त्यागकर अपना आपा-भाव सतिगुरु के हवाले कर देता है, ऐसे सेवक के सारे कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं। ऐसा सेवक सेवा करते हुए किसी फल की कामना नहीं करता अर्थात् निष्काम भाव से सेवा करता है, उसे परमेश्वर मिल जाता है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिस पर मालिक प्रभु कृपा-दृष्टि करता है वही सेवक गुरु की शिक्षा को पूर्णतया ग्रहण करता है अर्थात् ऐसा सेवक प्रभु-कृपा से अपनी मति त्यागकर, मनमति त्यागकर गुरमति का धारक हो जाता है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु साहिब ने पूर्ण सेवक के लक्षण बताये हैं कि किस प्रकार अपना मन पूर्णतया गुरु के अधीन कर देने वाले सेवकों के समस्त कार्य सहजता से सम्पन्न हो जाते हैं। निष्काम भाव से सेवा करने वाले सेवकों को प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। सेवक मनमर्ज़ी को पूर्णतया त्यागकर खुद को गुरु के अधीन कर दे, मन वचन कर्म से गुरु के हुक्म की पालना करता हुआ गुरु पर बलिहार जाए। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं। तीसरे पातशाह की प्रमुख बाणी 'अनंदु साहिब' में भी शिष्य के लिए ऐसा ही आदर्श है :

तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥
हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥
(पन्ना ९१८)

सेवक निष्काम भाव से सेवा करता हुआ गुरु में ही अभेद हो जाता है। 'आसा की वार' बाणी में फरमान है :

नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥
(पन्ना ४७५)

ऐसे सेवकों के समस्त कार्यों में प्रभु अंग-

संग सहायी होकर उन कार्यों को सम्पूर्णता बख़्शता है :

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥ . . .
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥ (पन्ना ७८३)

यह सब कुछ तभी मुमकिन है जब प्रभु अपने सेवक पर रहमत करके उसे सेवा करने का बल एवं उद्यम बख़्शे।

बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥
सरब निधान जीअ का दाता ॥
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥
ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥

१८वीं असटपदी की तीसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने पूर्ण सेवक एवं पूर्ण सतिगुरु की अवस्था को बयान किया है और साथ ही परमेश्वर एवं पूर्ण सतिगुरु को अभेद बताया है। ऐसा पूर्ण गुरु हज़ारों चतुराइयों से भी प्राप्त नहीं होता बल्कि भाग्य से ही मिलता है। इस रहस्य को कलयुगी जीवों को समझाने का उपकार किया गया है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि जिस सेवक पर प्रभु की पूर्णतया प्रसन्नता हो जाती है उसकी श्रद्धा और विश्वास में अथवा आज्ञा-पालन में किसी तरह की कोई कमी नहीं आ सकती। मानो ऐसे सेवक ने तो परमेश्वर की अवस्था को समझ लिया; उसके लिए प्रभु-प्राप्ति का संयोग बन गया। सतिगुरु भी वही है जिसके हृदय में अकाल पुरख बसता है, जिसके रोम-रोम में परमेश्वर निवास करता है। गुरु साहिब वचन करते हैं कि मैं ऐसे गुरु से बारंबार कुर्बान (बलिहार) जाता हूं। सतिगुरु समस्त खज़ानों का मालिक होता है और जीवन दाता है। ऐसा गुरु आठ पहर अर्थात् हर पल पारब्रह्म परमेश्वर के रंग में रंगा रहता है अर्थात् हरि-प्रेम में मगन रहता है। सेवक प्रभु में और प्रभु सेवक के अंत:करण में समाया होता है। इस बात में तनिक भी संदेह नहीं। सेवक (भक्त) और भगवान एक ही होते हैं। दोनों अभेद हैं। दोनों में ज़रा भी भेद नहीं। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन संदेश देते हुए फरमान करते हैं कि पूर्ण गुरु को हज़ारों चतुराइयों (चालाकियों) से नहीं पाया जा सकता अपितु श्रेष्ठ भाग्य से पाया जा सकता है।

सेवक का अपने सतिगुरु को अपनी सच्ची श्रद्धा-भावना का यकीन दिलवा देना ही उसकी सच्ची साधना है जिसके फलस्वरूप पूर्ण गुरु उसे परमेश्वर से मिलवा देता है। गुरु की प्रसन्नता पाना ही परमेश्वर की प्रसन्नता पाना है। समर्थ गुरु प्रभु-प्रेम-रंग में रंगे होने के कारण अपने भक्त को आत्मिक जीवन की समझ बख़्शता है। रूहानी ज्ञान से जीव के अंत:करण में प्रकाश हो जाता है। उसे जीवन की युक्ति समझ आ जाती है जिसके फलस्वरूप वह संसार में विचरण करते हुए विकारों से निर्लेप रहकर परमेश्वर से जुड़ा रहता है। ठीक उसी तरह जैसे कमल कीचड़ में रहकर भी उस से निर्लिप्त रहता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि सतिगुरु समर्थ पुरख और सर्वश्रेष्ठ दाता है। वह नाम रूपी अमृत से अपने जन को परिपूर्ण परमेश्वर की भक्ति में लीन कर देता है। श्री गुरु रामदास जी की पावन बाणी का प्रमाण है :

सतगुरु दाता वडा वड पुरखु है जितु मिलिऐ हरि उर धारे ॥
जीअ दानु गुरि पूरै दीआ हरि अंम्रित नामु समारे ॥ *(पन्ना ८८२)*

सचमुच ऐसे समर्थ गुरु को चतुराइयों से नहीं बल्कि भाग्य से ही पाया जा सकता है :
लिलाट लिखे पाइआ गुरु साधू गुर बचनी मनु तनु राता ॥ . . .
तिन की पंक पाईऐ वडभागी जन नानकु चरनि पराता ॥ *(पन्ना ९८४)*

ऐसे समर्थ परिपूर्ण गुरु की चरण-धूलि भाग्य से नसीब होती है। ऐसे गुरु पर से बार-बार बलिहार जाना चाहिए क्योंकि परमेश्वर और गुरु एक ही रूप हैं। भक्त कबीर जी ने श्रद्धावश गुरु का दर्जा प्रभु से भी ऊंचा माना है। उनका कहना है कि गुरु और प्रभु दोनों ही संयोग से मेरे समक्ष एक साथ खड़े हों तो मैं पहले किसके चरणों में नत्मस्तक होऊं? फिर स्वयं ही स्पष्ट करते हैं कि पहले गुरु-चरणों पर बलिहार जाता हूं जिसने परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग बताया है।

सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥
परसत चरन गति निरमल रीति ॥
भेटत संगि राम गुन रवे ॥
पारब्रहम की दरगह गवे ॥
सुनि करि बचन करन आघाने ॥
मनि संतोखु आतम पतीआने ॥
पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥
अंम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥
गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥
नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥४॥

१८वीं असटपदी की चौथी पउड़ी में भी गुरु पंचम पातशाह पूर्ण गुरु की महिमा का गुणगान करते हैं। गुरु के पावन उपदेश, कृपा-दृष्टि जीव हेतु शांति एवं सुकून प्रदान करती है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरु का दर्शन सफल है, जिसके दर्शन-मात्र से जीव पवित्र हो जाता है। गुरु के चरणों को स्पर्श करने से अर्थात् उनकी संगति से मुक्ति की निर्मल युक्ति मिलती है। ऐसे गुरु की संगत में जीव प्रभु के गुण गायन करने लगता है और परमेश्वर की दरगाह में स्वीकृत हो जाता है। ऐसे गुरु के वचन सुनकर कान तृप्त हो जाते हैं, मन संतोषी हो जाता है और आत्मा को शांति मिलती है। पूर्ण गुरु द्वारा बख़्शा हुआ नाम रूपी मंत्र कभी निष्फल नहीं जाता। गुरु जिसकी ओर अमृतमयी दृष्टि से देखता है वह पूर्ण संत हो जाता है। सतिगुरु के गुण बेअंत हैं। उसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती। गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर को जो जीव भा जाता है अर्थात् अच्छा लग जाता है, वो उसका पूर्ण गुरु से मिलाप करवा देता है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने गुरु को निर्गुण प्रभु का सगुण साकार रूप माना है जिसके दर्शन-मात्र से मन निर्मल हो जाता है, जिसके उपदेश जीवन युक्ति समझाते हैं, जिसके फलस्वरूप मन समस्त विकारों से बेमुख होकर आध्यात्मिक सफर तय करता है और उसकी प्रवृत्ति संतोषी हो जाती है। संतोषी प्रवृत्ति का मनुष्य हमेशा सुखी रहता है। यह तब संभव होता है, जब जीव गुरु की शरण में आ जाता है। गुरु के चरण ही उसके जीवन का आधार बन जाते हैं। गुरबाणी में अन्यत्र समझाया गया है :

सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥
जत कत पेखउ तत तत साथै ॥
चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥ *(पन्ना ५३५)*

जब किसी जीव के जीवन का आधार पूर्ण गुरु के चरण-कमल बन जाएं तो जीव की सोच शुभ हो जाती है। गुरु अपने दास की मर्यादा की रक्षा करता है। ऐसे मनुष्य के समस्त कार्य स्वाभाविक ही संवर जाते हैं :

सुभ चितवनि दास तुमारे ॥
राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥
(पन्ना ६२७)

गुरु जीव को सभी दुविधाओं से मुक्त कर शबद से जोड़कर आत्मा को सचखंड का मार्ग सुझाता है :

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ (पन्ना ११८५)

दुविधा दूर होते ही जीव सही दिशा में चलना प्रारंभ करके कामयाबी की मंज़िल हासिल कर लेता है, जिसे पाने हेतु उसे यह अमूल्य जीवन नसीब हुआ है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ (पन्ना १२)

वास्तव में यह जीवन-मनोरथ परमेश्वर की रहमत से, पूर्ण गुरु की प्राप्ति से ही मुमकिन है। आवश्यकता है तो केवल अहंकार त्यागकर उसकी शरण में आने की। शरणागत की रक्षा करना उसका बिरद है और वह अपने बिरद की हमेशा लाज रखता है :

भगतु तेरा सोई तुधु भावै जिस नो तू रंगु धरता ॥
तू वड दाता तू वड दाना अउरु नही को दूजा ॥ . . .
कहु नानक ढहि पइआ दुआरै रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥ (पन्ना ११८५)

कविता

जीवन की पतवार

हे प्रभु! तुमको सौंप दी है,
अपने जीवन की पतवार।
कृपा करके उबारो मुझको,
करो मुझे इस भव से पार।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह में,
भटक-भटक हारा यह मन।
दुष्कर्मों में लगा रहा यह,
कर न सका तेरा चिंतन।
बिना तुम्हारे प्रभु मुझे,
जीवन यह लगता है भार।
कृपा करके उबारो मुझको,
करो मुझे इस भव से पार।
दुष्कर्मों से दूर हटाकर,
सत्कर्मों में मुझे लगा दो।
जीवन व्यर्थ न जाये जिससे,
ऐसी विमल बुद्धि उपजा दो।
घर तेरा इस जग को देखूं,
प्रतिपल उसमें करूं विहार।
कृपा करके उबारो मुझको,
करो मुझे इस भव से पार।
जन सेवा में जीवन बीते,
छिन जाए सारी भटकन।
जीवन होवे सफल सार्थक,
कृपा इतनी करो भगवन!
सद्विचार से जीवन महके,
मन से हट जायें कुविचार।
कृपा करके उबारो मुझको,
करो मुझे इस भव से पार।

-डॉ. त्रिलोकी सिंह, ग्राम हिंदूपुर, पो. करछना, ज़िला इलाहाबाद-२१२३०१

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : २५

प्रो. किरपाल सिंह बडूंगर

*-स. रूप सिंह**

गुरसिक्खी गुणों से ओत-प्रोत, विद्या-प्रेमी, प्रसिद्ध लेखक, विद्वान, वक्ता, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष पद पर आसीन रह चुके प्रो. किरपाल सिंह बडूंगर का जन्म १४ जनवरी, १९४२ ई. को पिता डॉ. गुरचरन सिंह व माता इंदर कौर के घर गांव बडूंगर, ज़िला पटियाला में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्कूल से प्राप्त करने के उपरांत इन्होंने ज्ञानी का इम्तिहान पास किया। खालसा कॉलेज, पटियाला से बी. ए. की डिग्री प्राप्त करके महिंदरा कॉलेज पटियाला से एम. ए. (अंग्रेजी) उत्तीर्ण की। इन्होंने पढ़ाई के दौरान विद्यार्थी गतिविधियों में हिस्सा लेते हुए विद्यार्थी नेता के रूप में नाम कमाया।

आप दिन-रात साहित्य पढ़ते हैं, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध क्रांतिकारी तरीके से आवाज़ उठाते हैं तथा बेबाकी से लिखते हैं। आप पब्लिक हेल्थ, म्यूंसिपल कमेटी व भाषा विभाग पंजाब में अलग-अलग पदों पर कार्यशील रहे। इन्होंने कुछ समय हायर सेकंडरी स्कूल, लोपोके में लेक्चरर के रूप में सेवा की और फिर माता गुजरी कॉलेज, फ़तहिगढ़ साहिब में प्राध्यापक के रूप में सेवा करते रहे। इनका आनंद कारज बीबी निरमल कौर के साथ हुआ। इन्होंने परिवार को सिक्खी संस्कार देने के सार्थक यत्न किए। जिसके मीठे सुखदायक फल के रूप में इनके बच्चे-बच्चियां, पोते-पोतियां तथा नाते-नातियां सिक्खी स्वरूप में रहकर समाज में इनका सर ऊंचा कर रहे हैं।

बडूंगर साहिब ने अपने बौद्धिक चारित्रिक तथा बहुपक्षीय गुणों के बलबूते पर राजनीति में प्रवेश किया। गहन धार्मिक संस्कारों वाले बडूंगर साहिब पंथक जज़्बे से सरशार हैं। राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने के कारण अकाली दल (देहाती) पटियाला के महासचिव बने। आपातकालीन मोर्चे के समय बड़े जत्थे की अगुआई करके जेल-यात्रा की। मेरठ गुरुद्वारा साहिब के मोर्चे, कपूरी मोर्चे, धर्म-युद्ध मोर्चे के समय लंबा समय जेल-यात्रा की। इन्होंने १९९० ई. में समाणा क्षेत्र से एम. एल. ए. का चुनाव लड़ा। बरनाला सरकार के दौरान इनको अकाली दल के आर्गेनाइज़िंग सचिव होने का सम्मान हासिल हुआ तथा १९९६ ई. में बतौर सचिव, शिरोमणि अकाली दल के रूप में अहम भूमिका निभाई। इनकी बौद्धिक प्रतिभा ने अकाली राजनीति को आदर्शक दिशा देने में भरपूर योगदान डाला।

आप अपनी सूक्ष्मता तथा सहजता के कारण सिरमौर कद्दावर अगुओं में शामिल हुए। सार्थक कार्य-शैली का सदका पहली बादल सरकार के समय ओ. एस. डी. के विशेष पद पर विराजमान होकर इन्होंने सरकारी कार्य प्रणाली में सुचारू भूमिका निभाई। आप अपनी लगन, धैर्य, ईमानदारी, मेहनत तथा दूरंदेशी सोच व नि:स्वार्थी भावना से शिरोमणि अकाली दल की निरंतर निष्काम सेवा कर रहे हैं। १९९७ ई. से शिरोमणि अकाली दल द्वारा लड़े लोक सभा

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. +९१९८१४६-३७९७९*

व विधान सभा के चुनाव के समय बतौर चुनाव इंचार्ज शिरोमणि अकाली दल में सेवा निभाकर नाम कमाया।

बडूंगर साहिब ने अपनी राजनीतिक व्यस्तताओं के होते हुए भी अपनी अंदरूनी बौद्धिक तथा मौलिक प्रतिभा को सद-जीवित रखा है। सिक्ख इतिहास, गुरमति विचारधारा, सिक्ख रहित मर्यादा तथा तत्कालीन कौमी व पंथक मामलों के बारे में आपने गहन चिंतन किया है तथा सैकडों उच्च स्तर के आलेख प्रकाशित करवाए हैं। समकालीन समाज को अच्छी दिशा प्रदान करने का इनका सार्थक उद्यम प्रशंसनीय है। बडूंगर साहिब ने 'गुरमति सभ्याचार', गुरमति विचार' तथा 'जिन्हा धरम नहीं हारिआ' नामक पुस्तकों के अलावा सिक्खी जीवन के बारे में पुस्तकें लिखकर पंजाबी साहित्य तथा गुरमति साहित्य परंपरा को और अमीर एवं खुशहाल बनाने में भरपूर हिस्सा डाला है।

१९९६ ई में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के आम चुनाव के समय प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी नामज़द किए गए। २७ नवंबर, २००१ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वार्षिक चुनाव के समय स. इंदरपाल सिंघ दिल्ली सदस्य शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर का नाम अध्यक्ष पद के लिए पेश किया। स. सरूप सिंघ (ढेसी), सदस्य शिरोमणि गु. प्र, कमेटी ने स. सुखदेव सिंघ भौर का नाम भी अध्यक्ष पद के लिए पेश कर दिया। दो नाम पेश होने पर मतों द्वारा चुनाव किया गया। प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर को ११२ तथा स. सुखदेव सिंघ को ५६ मत प्राप्त हुए। इस तरह प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सम्मानजनक पद पर विराजमान हुए।

१२ नवंबर, २००२ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष, ओहदेदार व कार्यकारिणी के चुनाव के समय स. जोरा सिंघ (मान), सदस्य शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर का नाम अध्यक्ष पद के लिए पेश किया तथा जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा, सदस्य शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने बाबा (संत) वीर सिंघ मद्दोके का नाम अध्यक्ष पद के लिए पेश कर दिया। मतदान के बाद प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर को ९१ तथा बाबा (संत) वीर सिंघ मद्दोके को ६८ मत प्राप्त हुए। इस तरह इनको दूसरी बार अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सम्मानजनक पद पर विराजमान होने का सम्मान प्राप्त हुआ।

शिक्षित अध्यक्ष होने के कारण विश्वव्यापी सिक्ख भाईचारे ने बडूंगर साहिब की अध्यक्ष वाली कार्य-शैली को काफी सराहा। बडूंगर साहिब ने शैक्षणिक अदारों में अच्छी शिक्षा वाला माहौल सृजित करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को उत्साहित करने का फैसला किया, जिसके बहुत सार्थक परिणाम सामने आए। बडूंगर साहिब ने राष्ट्रीय सिक्ख समस्याओं के हल के लिए राष्ट्रीय स्तर का राजनीति से मुक्त सलाहकार बोर्ड बनाने की योजना बनाई। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के चुनाव के समय 'सहिजधारी सिक्ख' के बुरके तले गैर-सिक्खों की वोटें बनाने का बडूंगर साहिब ने अपने अध्यक्ष काल में डटकर विरोध किया तथा समूह धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, निहंग जत्थेबंदियों, पंथ-दर्दियों को समय की सरकार की इन घटिया नीतियों का कड़ा जवाब देने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को समर्थन व सहयोग देने की अपील की।

पंजाब सरकार द्वारा शराब की खुली बिक्री तथा पश्चिम की तरह जूआ घर खोलने की नीति का बडूंगर साहिब ने कड़ा विरोध किया।

पंजाब सरकार द्वारा विधान सभा सेशन की कार्यवाही मातृ-भाषा पंजाबी की जगह अंग्रेजी में चलाने की इन्होंने सख़्त निंदा की तथा पंजाब सरकार की पंजाबी भाषा के प्रति की कार्यवाही पर इन्होंने निंदा प्रस्ताव पास किया। इस विशेष प्रस्ताव द्वारा आर. एस. एस. के बयान-- "अल्प संख्यकों को बहुसंख्यक के रहमो-कर्म पर रहना पड़ेगा" की सख़्त निंदा की तथा कहा कि ऐसा बयान भारतीय संविधान का घोर अपमान है। १३ मई, २००३ ई. को प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने समकालीन मुख्यमंत्री पंजाब को पत्र लिखकर मांग की कि दिव्य ज्योति जागृति संस्थान के कारकुनों द्वारा गुरु साहिबान के प्रति इस्तेमाल की जाती अपमानजनक शब्दावली का सख़्त नोटिस लिया जाए तथा पंजाब के शांत महौल को खराब करने की किसी को आज्ञा न दी जाए। बडूंगर साहिब ने तथाकथित साध नूरमहलिए, भनियारा वाले के पाखंड जाल से निजात दिलाने के लिए विशेष जागृति लहर चलाई। गुरमति ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी भाषा में 'गुरमति ज्ञान' नामक त्रैमासिक पत्रिका जारी की जो अब विकास करती हुई मासिक हो गई है। बडूंगर साहिब ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर मांग की कि एक सिक्ख प्रतिनिध मंडल अफगानिस्तान भेजने की आज्ञा दी जाए ताकि वहां के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान की निशानदेही तथा नव निर्माण करने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी कार्यशील हो सके।

५ जनवरी, २००२ ई. को साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश पर्व के समय बधाई संदेश में प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने विलक्षण शुरूआत की कि सिक्ख समाज में फैल रही भ्रूण-हत्या, नशे तथा पतितता की मारू बीमारी को जड़ से उखाड़ने के लिए गुरु-आशय के अनुसार सिंघ सभा लहर की तरह दूसरी सिक्ख जागृति लहर चलाएं व प्रचंड करें। इनके प्रयत्नों का सदका 'बब्बर अकाली लहर का भारत की आज़ादी में योगदान' विषय पर सेमिनार व समारोह आयोजित किया गया तथा बब्बर अकाली लहर के वारिसों को पहली बार सम्मान दिया गया। स्वतंत्र सिक्ख अस्तित्व, हस्ती व सोच के प्रतीक नानकशाही कैलेंडर को वैसाखी के दिवस पर तख़्त श्री दमदमा साहिब से जारी करने का सौभाग्य भी बडूंगर साहिब को ही प्राप्त हुआ। इनके अध्यक्ष-काल के समय ही ६ जून, २००३ ई. को २०वीं सदी के महान प्रचारक तथा जरनैल बाबा जरनैल सिंघ भिंडरावाला को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा शहीद करार दिया गया तथा शहीदी यादगार निर्मित करने का फैसला किया गया। शहीदों के वारिसों एवं परिवारों को सम्मान भी दिया गया। श्री अकाल तख़्त साहिब के समक्ष मीरी-पीरी के प्रतीक निशान साहिब झुलाने का सौभाग्य भी इनको प्राप्त हुआ। इनके ऐतिहासिक कार्यों की लोगों ने भरपूर प्रशंसा की।

बडूंगर साहिब ने सिंघ सभा लहर के प्रवर्त्तक प्रो. गुरमुख सिंघ की याद को समर्पित एकत्रता हॉल का गुरुद्वारा श्री फ़तहिगढ़ साहिब में निर्माण कार्य करवाया। इन्होंने अपने अध्यक्षता-काल के दौरान ही ज्ञानी दित्त सिंघ यादगारी पुरस्कार तथा सम्मान हर वर्ष एक सिक्ख विद्वान को देने की रीति शुरू की व पहला सम्मान प्रो. हरिंदर सिंघ महबूब को प्रदान किया गया। सिक्खी सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार हेतु सिंघ साहिबान की अगुआई में पांच प्रचार केंद्र स्थापित किए। सामाजिक बुराइयों से जागृत करने व सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक विचार-गोष्ठियां की गईं। इनके द्वारा

धार्मिक सलाहकार कमेटी का नव गठन किया गया। इनके द्वारा फ्रांस में सिक्खों की दसतार के मामले सम्बंधी देश के प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी को पत्र लिखकर भारत सरकार को फ्रांस सरकार पर दबाव बनाने के लिए विनती की गई।

श्री गुरु रामदास मेडिकल कॉलेज को मेडिकल कौंसिल ऑफ इंडिया द्वारा मान्यता भी बडूंगर साहिब के अध्यक्ष-काल में ही प्राप्त हुई। इनके कार्यकाल के समय ही पंथ के प्रसिद्ध ढाडी ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल की याद में ढाडी कॉलेज का शिलान्यास गुरु की वडाली में रखा गया। बडूंगर साहिब ने ही त्रै-शताब्दी खालसा कॉलेज का शिलान्यास श्री अमृतसर के गांव भराड़ीवाल में रखा। खालसाई खेल करवाने की ऐतिहासिक रीति भी बडूंगर साहिब के अध्यक्ष काल के समय ही आरंभ हुई। श्री हरिमंदर साहिब को विश्व विरासत का दर्जा देने सम्बंधी शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा केंद्रीय सरकार को रिपोर्ट बडूंगर साहिब के समय ही भेजी गयी। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा प्रो. दविंदर सिंघ (भुल्लर) की फांसी की सज़ा माफ करवाने हेतु भारत सरकार को पत्र लिखकर मांग की गयी। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा नए सिरे से सिक्ख इतिहास को कलमबंद कराने की योजना बनाई तथा चलाए जा रहे समूह मिशनरी कॉलिजों के सिलेबस को इकसार करने का बीड़ा उठाया। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा इससे सम्बंधित संस्थाओं के मुलाज़िमों के रेफ्रेंस कोर्स लगाने शुरू किए तथा स्टॉफ ट्रेनिंग कॉलेज आरंभ करने का एलान किया। झंडा लुबाणा में माता साहिब कौर की याद में लड़कियों का कॉलेज आरंभ करने का फैसला भी इनकी अध्यक्षता के समय ही लिया गया। बडूंगर साहिब ने २९ मार्च, २००३ ई को वार्षिक बजट समारोह की अध्यक्षता की। लिबनान की संगत द्वारा श्री गुरु रामदास लंगर हॉल हेतु प्रशादे बनाने वाली मशीन भेंट की गई, जिसकी आरंभता बडूंगर साहिब ने की। भक्त सैण जी की तसवीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय में सुशोभित करने का सौभाग्य भी बडूंगर साहिब को ही प्राप्त हुआ। १४ अप्रैल, २००२ ई को 'ऐतिहासिक यादगारें स्थापन कमेटी' का गठन किया जिसमें शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्यों के अतिरिक्त प्रसिद्ध इतिहासकारों को शामिल किया गया जिसका मंतव्य ऐतिहासिक घल्लूघारों व घटनाओं से सम्बंधित यादगारों को स्थापित करना था, परंतु यह मात्र योजनाएं ही रह गईं। ३० मार्च, २००७ ई को बडूंगर साहिब ने वार्षिक बजट समारोह की अध्यक्षता करते हुए वार्षिक बजट पास करवाया।

ज्ञानी केवल सिंघ जत्थेदार तख़्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो द्वारा त्यागपत्र देने के कारण उनकी जगह प्रो. मनजीत सिंघ को कार्यकारी जत्थेदार बडूंगर साहिब के समय ही लगाया गया। ज्ञानी जसवंत सिंघ की श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी के रूप में नियुक्ति भी इनके समय ही हुई। ज्ञानी बलवंत सिंघ नंदगढ़ ने जत्थेदार तख़्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो के रूप में सेवा बडूंगर साहिब के समय ही संभाली। प्रो. मनजीत सिंघ जत्थेदार की सेवाओं को समाप्त भी इनके कार्यकाल के दौरान ही किया गया। ज्ञानी तरलोचन सिंघ को तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के कार्यकारी जत्थेदार के रूप में सेवा-संभाल भी बडूंगर साहिब के समय ही सौंपी गई।

१६ जुलाई, २००३ को स. परकाश सिंघ बादल अध्यक्ष शिरोमणि अकाली दल ने श्री अकाल तख़्त साहिब से हुए आदेश के अनुसार

गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हॉल, श्री अमृतसर में श्री अखंड पाठ साहिब करवाया, जिसमें जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा तथा बादल साहिब एक बार फिर बगलगीर हो गए तथा दोनों दलों का मिश्रण हो गया। २० जुलाई, २००३ ई. को कार्यकारिणी की मीटिंग के समय आप जी ने पंथक एकता के लिए त्याग-भावना प्रकट करते हुए अध्यक्ष की पदवी से त्यागपत्र दे दिया, जिससे स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके कार्यकारी अध्यक्ष चुने गए। २७ जुलाई, २००३ ई. को कार्यकारिणी की मीटिंग में जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए। इस तरह इनका अध्यक्षता-काल सम्पूर्ण हो गया। २००४ ई. में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के आम चुनाव के उपरांत हुए जनरल इजलास के समय प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर दूसरी बार सदस्य शिरोमणि गु. प्र. कमेटी नामज़द किए गए। आजकल बडूंगर साहिब पंजाब पिछड़ी श्रेणी कार्पोरेशन के चेयरमैन की सेवा भी निभा रहे हैं।

कविताएं

प्रार्थना-- तुमसे सच्ची प्रीत हो

देवों के आराध्य हो !
भक्तों के तुम साध्य हो !
प्रेम-भावना के बंधन में,
बंधने को तुम बाध्य हो !
जीवन का तुम सार हो !
जगती का आधार हो !
जिसका मन रमता है तुम में,
उसका बेड़ा पार हो !
जिसे न कोई आस है !
बस, भक्ति की प्यास है !
उसी भक्त के हृदय-कुंज में,
सदा तुम्हारा वास है !
जिसका तुम-सा मीत हो !
फिर वो क्यों भयभीत हो ?
कृपा करो ऐसी कि मुझको,
तुमसे सच्ची प्रीत हो !

मानव धर्म

धर्म प्यासे को पिलाना, धर्म रोते को हंसाना।
जो पथिक पथ भूल जाये, धर्म उसको पथ दिखलाना।
बेसहारों को सहारा, बेठिकानों को ठिकाना।
जो दिखे कर्त्तव्य अपना, धर्म है उसको निभाना।
ठंड से ठिठुरे हुए को, वस्त्र देना धर्म है।
भूख से व्याकुल किसी को, अन्न देना धर्म है।
भाव हों करुणा के जिसमें, उस हृदय में धर्म है।
हो सजल गैरों के दुख से, उस नयन में धर्म है।
हो किसी को दुख अगर तो, धर्म उसके कष्ट हरना।
कष्ट कम न कर सकें तो, सांत्वना का लेप करना।
सार रूप में कहें तो, जानना इसी को धर्म।
सत्य-करुणा से हों पूरित, मन, वचन और कर्म।

प्रार्थना-- जीवन सफल हमारा हो

सद्‌गुण इतने शक्तिवान हों, जीवन-रण में मिले विजय।
प्रभु में इतना प्रबल भरोसा, किसी बात का न हो भय।
कभी निराशा पास न फटके, मन में हो उल्लास भरा।
और हमारे संग-साथ से, सबका जीवन हरा-भरा।
कर्म हमारे, भाव हमारे, सभी मधुर हों मंगलमय।
सदा पुण्य का सूर्य उदय हो, पाप-कर्म का होवे क्षय।
ईश्वर से है यही प्रार्थना, जीवन सफल हमारा हो!
अच्छा सोचें, अच्छा करें, जीवन में उजियारा हो!

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो. : ०९४११६०७६७२

ख़बरनामा

तख़्त श्री हजूर साहिब के प्रबंधकीय बोर्ड में से शिरोमणि गु प्र कमेटी की नुमाइंदगी घटाना निंदनीय : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री फ़तहिगढ़ साहिब : २३ अगस्त : शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की कार्यकारिणी की विशेष एकत्रता जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की अध्यक्षता तले बाबा बंदा सिंघ बहादर इंजीनियरिंग कॉलेज फ़तहिगढ़ साहिब के एकत्रता हॉल में हुई।

एकत्रता के उपरांत पत्रकारों से बातचीत करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि तख़्त सचखंड श्री हजूर अबिचल नगर साहिब नांदेड़ के प्रबंधकीय बोर्ड के सदस्यों की संख्या १७ की जगह चाहे २१ की गई है परंतु सिक्ख कौम की प्रतीनिधि संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की नुमाइंदगी इसमें से कम करना अति निंदनीय है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र की कांग्रेस सरकार ने सिक्खों के धार्मिक मामलों में दख़लंदाज़ी करते हुए यह अभाग्यशाली फैसला किया है। सरकार ने यह फैसला करके तख़्त श्री हजूर साहिब को अन्य सिक्खों से अलग करने की घटिया कोशिश की है। उन्होंने कहा कि अलग-अलग संस्थाओं के प्रबंधकीय बोर्ड में सदस्य होने से अभिप्राय है कि समूचे देश की सिक्ख संगत आपस में जुड़ी रहे, परंतु महाराष्ट्र सरकार ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, चीफ खालसा दीवान तथा सिंघ सभाओं की नुमाइंदगी घटाकर सिक्ख विरोधी होने का सबूत दिया है।

उन्होंने यह भी जानकारी दी कि गत दिनों सहारनपुन (यू. पी.) में घटित हुई दुखदायक घटना के सिक्ख पीड़ितों की योग्य मदद को मुख्य रखते हुए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा १ करोड़ रुपए की सहायता प्रदान की गई है। इसी तरह सिक्ख धर्म के प्रचार व प्रसार की मुहिम को देश के दूसरे राज्यों में पूरी सतर्कता के साथ चलाने के लिए जल्द ही धर्म प्रचार कमेटी द्वारा और प्रचारक भर्ती किए जाएंगे तथा इसी श्रृंखला के अंतर्गत धर्म प्रचार कमेटी द्वारा गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब (उत्त रांचल) में उत्त रांचल सिक्ख मिशन के सब-ऑफिस की स्थापना की जाएगी। इसी तरह गुरु काशी गुरमति इंस्टीट्यूट, तलवंडी साबो (बठिंडा) में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों की सुविधा को मुख्य रखते हुए उनको शुद्ध पानी उपलब्ध कराने हेतु आर. ओ. सिस्टम लगाया जाएगा तथा गुरमति संगीत अकादमी शेखूपुर मंचूरी, ज़िला करनाल (हरियाणा) में गुरमति की शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को प्राथमिकता के आधार पर हारमोनियम, तबला सेट एवं पानी के कूलर उपलब्ध करवाए जाएंगे। उन्होंने अन्य जानकारी देते हुए बताया कि ऐतिहासिक गुरुद्वारों के रखरखाव तथा उनको और सुंदर बनाने (रंग-रोगन) के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा शीघ्र ही योग्य प्रयत्न शुरू करने का प्रॉजेक्ट शुरू किया जा रहा है।

एकत्रता में वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ करनाल, कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. केवल सिंघ बादल, महासचिव स. सुखदेव सिंघ भौर के अतिरिक्त कार्यकारिणी के सदस्य साहिबान तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के उच्चाधिकारी शामिल थे।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने की फिल्म 'कौम दे हीरें' पर पाबंदी लगाने की निंदा

श्री अमृतसर : २५ अगस्त : शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वक्ता व अतिरिक्त सचिव स. दिलजीत सिंघ ने जानकारी देते हुए बताया कि जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने पंजाबी फिल्म 'कौम दे हीरें' के प्रदर्शन पर लगाई गई पाबंदी की कड़े शब्दों में निंदा की है। उन्होंने कहा कि जत्थेदार अवतार सिंघ के अनुसार सेंसर बोर्ड तथा सूचना व प्रसारण मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा फिल्म पर लगाई गई पाबंदी निराधार है। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक सच्चाई को कदापि दबाया या छुपाया नहीं जा सकता तथा सच सदैव सच ही होता है।

उन्होंने कहा कि इस फिल्म में सिक्ख कौम से सम्बंधित भूतकाल में घटित हुई घटना को पर्दे पर लाने का प्रयत्न किया गया है। उन्होंने कहा कि किसी भी ऐसी फिल्म पर पाबंदी लगाने से पहले सेंसर बोर्ड तथा सूचना व प्रसारण मंत्रालय के अधिकारियों को सिक्ख बुद्धिजीवियों तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से बातचीत करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस फिल्म में दिखाई वो ऐतिहासिक सच्चाई है, जिसको आंखों से ओझल नहीं किया जा सकता।

मिशनरी कॉलेजों के लिए एक समान नियम एवं पाठ्यक्रम जारी

श्री अमृतसर : ३० अगस्त : जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने धर्म प्रचार कमेटी के मिशनरी कॉलेजों के लिए नियम एवं पाठ्यक्रम जारी करते हुए कहा कि धर्म प्रचार कमेटी द्वारा चलाए जा रहे सभी शैक्षणिक संस्थाओं का पाठ्यक्रम एकसार कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक संस्थाओं के पाठ्यक्रम को एकसार करने के लिए गठित की गई सब-कमेटी में स. सतबीर सिंघ तथा स. रूप सिंघ सचिव, स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा अतिरिक्त सचिव, डॉ. अमरजीत सिंघ प्रिंसीपल गुरु काशी गुरमति इंस्टीट्यूट, तलवंडी साबो (बठिंडा) तथा प्रो. सुरजीत सिंघ शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर ने अहम भूमिका निभाई है।

स. सतबीर सिंघ, सचिव, धर्म प्रचार कमेटी ने जानकारी देते हुए बताया कि धर्म प्रचार कमेटी सिक्ख धर्म तथा गुरमति के प्रचार-प्रसार के लिए सदैव कार्यशील रही है। इन कार्यों के अंतर्गत ही धर्म प्रचार कमेटी द्वारा नौजवान विद्यार्थियों को ऊंचे पैमाने की धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिए भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में १६ प्रमुख मिशनरी कॉलेज/ गुरमति विद्यालय तथा ११ सिक्ख प्रचार मिशन चलाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि शिक्षा को और सुचारू ढंग से चलाने के लिए इन सभी शैक्षणिक संस्थायों का पाठ्यक्रम एकसार कर दिया गया है जो कि अकादमिक पक्ष से एक बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है। उन्होंने कहा कि १६ मिशनरी संस्थाओं में चल रहे अलग-अलग गुरमति कोर्सों में १०८३ विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। इन संस्थाओं में संगीत, तबला तथा प्रचारक कक्षाओं का कोर्स तीन वर्षीय तथा ग्रंथी सिंघों का कोर्स दो वर्षीय रखा गया है तथा विद्यार्थियों को १२०० रुपए प्रति विद्यार्थी छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१०-२०१४